INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

# RAS

## RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

## प्रारंभिक + मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 1

## राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

# प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

***अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/***

**प्रकाशकः**

***INFUSION NOTES***

*जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)*

*मो : 9887809083*

*ईमेल : contact@infusionnotes.com*

*वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com*

**Whatsapp Link-** https://wa.link/uwc5lp

**Online Order Link-** https://bit.ly/3X6MGue

**मूल्य : ₹**

**संस्करण : नवीनतम**

# राजस्थान का इतिहास



| क्र. सं. | अध्याय | पेज नं. |
|---|---|---|
| 1. | राजस्थान इतिहास के स्रोत<br>• अभिलेख<br>    ○ शिलालेख, प्रशस्ति, स्तम्भ लेख<br>• सिक्के<br>• साहित्यिक स्रोत<br>• ताम्रपत्र<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 1 |
| 2. | प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)<br>• पुरापाषाण से ताम्र पाषाण एवं कांस्य युग तक<br>• प्रागैतिहासिक स्थल की विशेषताएं<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 20 |
| 3. | ऐतिहासिक राजस्थान<br>• महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक केंद्र<br>• प्राचीन राजस्थान में समाज, धर्म एवं संस्कृति<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 30 |
| 4. | प्रमुख राजवंशों के महत्त्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां<br>• प्रमुख राजवंश<br>    ○ गुहिल वंश<br>    ○ प्रतिहार वंश<br>    ○ चौहान वंश<br>    ○ परमार वंश<br>    ○ राठौड़ वंश<br>    ○ सिसोदिया वंश | 36 |

| | | |
|---|---|---|
| | ○ कछवाहा वंश<br>• प्रमुख घटनाएँ<br>• प्रमुख युद्ध, उनके कारण एवं परिणाम<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | |
| 5. | मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था<br>• राजस्थान में मराठा शक्ति का विस्तार<br>• प्रमुख युद्ध एवं उनके परिणाम<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 92 |
| 6. | आधुनिक राजस्थान (19 वीं – 20 वीं शताब्दी की प्रमुख घटनाएँ)<br>• राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियाँ<br>• राजस्थान में 1857 का विद्रोह<br>• विभिन सामाजिक कुरीतियाँ<br>• सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दे<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 107 |
| 7. | राजस्थान में राजनीतिक जागरण<br>• राजनीतिक जागरण के लिए उत्तरदायी कारक<br>• समाचार पत्रों एवं राजनीतिक संस्थाओं की भूमिका<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 123 |
| 8. | 20 वीं शताब्दी में राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 128 |
| 9. | विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 137 |
| 10. | राजस्थान का एकीकरण<br>• एकीकरण के समय प्रमुख घटनाएँ एवं उनके कारण<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 150 |

# राजस्थान की कला एवं संस्कृति (धरोहर)



| क्र.सं. | अध्याय | पेज नं. |
|---|---|---|
| 1. | राजस्थान की वास्तु परम्परा<br>• प्रमुख मंदिर एवं मंदिर निर्माण की शैलियाँ<br>• महत्त्वपूर्ण किले एवं उनकी विशेषताएं<br>• महत्त्वपूर्ण महल एवं उनकी विशेषताएं<br>• मानव निर्मित जलीय संरचना<br>• राजस्थान में विश्व विरासत के प्रमुख स्थल<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 155 |
| 2. | चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ, उपशैलियाँ और हस्तशिल्प<br>• मेवाड़, उदयपुर, नाथद्वार, देवगढ़, चावण्ड, मारवाड़, जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, बूंदी, हाड़ौती इत्यादि<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 194 |
| 3. | प्रदर्शन कला एवं ललित कला तथा उनकी विशेषताएं<br>• शास्त्रीय संगीत<br>• शास्त्रीय नृत्य<br>• लोक संगीत एवं वाद्ययंत्र<br>• लोक नृत्य एवं नाट्य<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 216 |
| 4. | भाषा एवं साहित्य<br>• महत्त्वपूर्ण कृतियाँ एवं बोलियां, लोक साहित्य<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 250 |
| 5. | धार्मिक जीवन<br>• धार्मिक समुदाय | 264 |

| | | |
|---|---|---|
| | • राजस्थान में संत एवं संप्रदाय<br>• राजस्थान के लोक देवी - देवता<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | |
| 6. | राजस्थान में सामाजिक जीवन<br>• प्रमुख मेले एवं उनकी विशेषताएं<br>• प्रमुख त्यौहार एवं उनकी विशेषताएं<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 285 |
| 7. | सामाजिक रीति रिवाज एवं परम्पराएँ<br>• विशेषताएं एवं उनका महत्त्व<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 298 |
| 8. | वेशभूषा एवं आभूषण<br>• विशेषताएं एवं उनका महत्त्व<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 303 |
| 9. | राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व<br>• प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न | 306 |

# राजस्थान का इतिहास

## अध्याय – 1

## राजस्थान इतिहास के स्रोत

**परिचय -**

सामान्यतः इतिहासकार द्वारा अतीत की घटनाओं का गहन अध्ययन करके मानवीय मस्तिष्क को समझना ही इतिहास है।

इतिहास का जनक हेरोडोटस को कहा जाता है वे एक इतिहासकार थे।

| |
|---|
| हेरोडोटस (मृत्यु 425 ई. पू.), यूनान के प्रथम इतिहासकार एवं भूगोलवेत्ता थे। उन्होंने अपने इतिहास का विषय पेलोपोनेसियन युद्ध को बनाया था। उनके द्वारा लिखित पुस्तक हिस्टोरिका थी। |

**इतिहास का अध्ययन : -**

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

**1. प्रागैतिहासिक काल -**

वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है। मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल से ही हुई है।

**2. आद्य ऐतिहासिक काल –**

आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिंधु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं । इस काल की लिपि को सर्पीलाकार लिपि कहते हैं क्योंकि सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी । इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं । इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है। राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

**3. ऐतिहासिक काल**

ऐतिहासिक काल वह काल होता है । जिसमें लिखित स्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे वैदिक काल जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है। प्राचीन इतिहास के स्रोत-पुरातात्विक एवं साहित्यिक स्रोत।

- **राजस्थान इतिहास को जानने के स्रोत :-**

  इतिहास का शाब्दिक अर्थ है – "ऐसा निश्चित रूप से हुआ है"। इतिहास के जनक यूनान के हेरोडोटस को माना जाता है लगभग 2500 वर्ष पूर्व उन्होंने " हिस्टोरिका" नामक ग्रन्थ की रचना की । इस ग्रन्थ में उन्होंने भारत का उल्लेख भी किया है ।

  भारतीय इतिहास के जनक मेगस्थनीज माने जाते हैं। महाभारत के लेखक "वेदव्यास" माने जाते हैं। महाभारत का प्राचीन नाम "जय संहिता" था।
- राजस्थान इतिहास के जनक "कर्नल जेम्स टॉड" कहे जाते हैं। वे 1818 से 1821 के मध्य **मेवाड़ (उदयपुर) प्रान्त के पॉलिटिकल** एजेंट थे उन्होंने घोड़े पर घूम-घूम कर राजस्थान के इतिहास को लिखा। अतः कर्नल टॉड को **"घोड़े वाले बाबा"** कहा जाता है। इन्होंने "एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" नामक पुस्तकालय का लन्दन में 1829 में प्रकाशन करवाया।
- गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (जी.एच. ओझा) ने इसका सर्वप्रथम हिन्दी में अनुवाद करवाया। इस पुस्तक का दूसरा नाम "सेंट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" है।
- कर्नल जेम्स टॉड की एक अन्य पुस्तक "ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया" का इसकी मृत्यु के 1837 में उनकी पत्नी ने प्रकाशन करवाया।
- अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ को पत्थर या धातु की सतह पर उकेरे गए लेखों को अभिलेख में सम्मिलित किया जाता है।
- अभिलेखों में शिलालेख, स्तम्भ लेख, मूर्ति लेख, गुहा लेख आदि को सम्मिलित किया जाता है।
- तिथि युक्त एवं समसामयिकी होने के कारण पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत अभिलेख सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।
- प्रारम्भिक अभिलेखों की भाषा संस्कृत थी जबकि मध्यकाल में इनमें उर्दू, फारसी व राजस्थानी भाषा का प्रयोग भी हुआ।
- अभिलेखों के अध्ययन को **एपिग्राफी** कहा जाता है।
- भारत में प्राचीनतम अभिलेख सम्राट अशोक मौर्य के हैं जिनकी **भाषा प्राकृत एवं मगधी तथा लिपि ब्राह्मी मिलती है।**
- शक शासक रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख भारत का पहला संस्कृत अभिलेख है।
- राजस्थान के अभिलेखों की मुख्य भाषा संस्कृत एवं राजस्थानी है तथा इनकी लिपि महाजनी एवं हर्ष लिपि है।
- फारसी भाषा मे लिखा सबसे पुराना लेख अजमेर के अढ़ाई दिन के झोंपड़े की दीवार के पीछे लिखा हुआ मिला है। यह लेख लगभग 1200 ई. का है।

**अशोक के अभिलेख :-**

- मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख बैराठ की पहाड़ी (कोटपूतली-बहरोड़) से मिले हैं।

- भाब्रू अभिलेख की खोज कैप्टेन बर्ट द्वारा बीजक की पहाड़ी से की गई। इस अभिलेख से अशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने तथा राजस्थान में मौर्य शासन होने की जानकारी मिलती है।
- अशोक का भाब्रू अभिलेख वर्तमान में **कलकत्ता संग्रहालय** में सुरक्षित है।

**बड़ली का अभिलेख :-**

- यह राजस्थान का सबसे **प्राचीनतम अभिलेख** है। 443 ई. पूर्व का यह अभिलेख **केकड़ी जिले** की भिनाय तहसील के **बड़ली गाँव** के भिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ।
- वर्तमान में यह **अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।**

**बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.):-**

- राजा वर्मलात के समय का यह अभिलेख बसंतगढ़ (सिरोही) से प्राप्त हुआ है।
- इससे अर्बुदांचल के राजा राज्जिल तथा उसके पुत्र सत्यदेव के बारे में जानकारी मिलती है।
- इसका लेखक द्विजन्मा तथा उत्कीर्णकर्ता नागमुण्डी था।
- दधिमति माता अभिलेख के बाद यह पश्चिमी राजस्थान का सबसे प्राचीन अभिलेख है।
- इस अभिलेख में सामन्त प्रथा का उल्लेख मिलता है।
- शिलालेख में मेवाड़ के गुहिल वंश शासक शिलादित्य का उल्लेख है ।

**मानमोरी का अभिलेख :-**

- 713 ई. का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण है।
- इस अभिलेख में इसके **रचयिता पुष्य** तथा उत्कीर्णकर्ता शिवादित्य का उल्लेख है।
- इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांग (चित्रांगद) के बारे में जानकारी मिलती है।
- राजा भोज के पुत्र मान द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण करवाये जाने का उल्लेख भी इसमें मिलता है।
- यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड द्वारा इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया गया था।
- इस अभिलेख में '**अमृत मंथन**' का उल्लेख मिलता है।
- इस अभिलेख में चार मौर्य शासकों **(महेश्वर, भीम, भोज एवं मान)** के बारे में जानकारी मिलती है।

**मण्डौर अभिलेख :-**

- जोधपुर के मंडोर में स्थित 837 ई. के इस अभिलेख में गुर्जर-प्रतिहार शासकों की वंशावली विष्णु तथा शिव पूजा का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख की रचना गुर्जर-प्रतिहार शासक बाउक द्वारा करवाई गई थी।

**प्रतापगढ़ अभिलेख (946 ई.):-**

- प्रतापगढ़ में स्थित इस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।

**बड़वा अभिलेख (238 – 239 ई.) :-**

- यह बड़वा (अंता तहसील, बारां जिला) में स्तम्भ पर उत्कीर्ण मौखरी वंश के शासकों का सबसे प्राचीन अभिलेख है। संस्कृत भाषा में लिखित इस अभिलेख से मौखरी शासकों बल, सोमदेव, बलसिंह आदि की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है।
- यह 3 यूप पर खुदा हुआ है ।

**कणसवा का अभिलेख :-**

- 738 ई. का यह अभिलेख कोटा के निकट कणसवा गाँव में उत्कीर्ण है जिसमें मौर्य वंश के राजा धवल का उल्लेख मिलता है।
- **राजा धवल को अंतिम मौर्य वंशी राजा माना जाता है ।**

**आदिवराह मंदिर का अभिलेख :-**

- 944 ई. का यह लेख उदयपुर के आदिवराह मंदिर से प्राप्त हुआ है जो संस्कृत में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है।
- यह लेख मेवाड़ के शासक भर्तृहरि द्वितीय के समय का है।
- इसके अनुसार आहड़ एक धर्म स्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

**सुण्डा पर्वत अभिलेख :-**

- जालौर स्थित सुण्डा पर्वत का यह अभिलेख चौहान शासक **चोचिंगदेव** के समय का है जिससे इसकी उपलब्धियों तथा शासन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

**अचलेश्वर का अभिलेख (1285 ई.) :-**

- यह अभिलेख संस्कृत भाषा में अचलेश्वर मंदिर के पास दीवार पर उत्कीर्ण है इसके रचयिता शुभचंद्र तथा उत्कीर्णकर्ता कर्मसिंह थे।
- इस अभिलेख में '**बापा**' से '**महाराणा समरसिंह**' तक की वंशावली का उल्लेख है।
- इसमें हारीत ऋषि की तपस्या तथा उनके आशीर्वाद से बापा को राज्य प्राप्ति का उल्लेख है।

**किराडू का लेख :-**

- 1161 ई. का यह लेख किराडू के शिव मंदिर में उत्कीर्ण है जिसकी भाषा संस्कृत है।
- इस लेख में परमारों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ से बतायी गई है।
- इस प्रशस्ति में किराडू की परमार शाखा का वंशक्रम दिया गया है।

**सांडेराव का लेख :-**

- 1164 ई. का यह लेख देसूरी के पास सांडेराव के महावीर जैन मंदिर में उत्कीर्ण है।
- यह लेख कल्हणदेव के समय का है जिसमें उसके परिवार द्वारा मंदिर के लिए दिये गए दान का उल्लेख मिलता है।
- इस लेख में उस समय के विभिन्न करों व भूमि की नाप के बारे में जानकारी मिलती है।

**श्रृंगी ऋषि का लेख :-**

- 1428 ई. का यह लेख मेवाड़ के एकलिंगजी के पास श्रृंगी ऋषि नामक स्थान पर काले पत्थर पर उत्कीर्ण है, जिसकी

- राजस्थान में इण्डो-ग्रीक सिक्के नलियासर (साँभर, जयपुर ग्रामीण), विराटनगर (कोटपूतली-बहरोड़), नगरी (चित्तौड़) से मिले हैं।
- 'इकतीसंदा रुपया' राजस्थान की मेड़ता टकसाल में बनता था।
- 'लल्लू लिया' नामक सिक्के का निर्माण सोजत में किया जाता था।
- प्रतिहार शासक मिहिर भोज के सिक्कों पर वराह अवतार का अंकन मिलता है।

**एलची** :- अकबर द्वारा चित्तौड़ विजय के पश्चात् जारी किए गए सिक्के।

**पारुथद्रम** :- मालवा के परमारों की मुद्रा।

**आहत मुद्रा** :-इन सिक्कों को ठप्पा मारकर बनाए जाने के कारण इन्हें आहत मुद्रा कहते हैं।

आहत सिक्के पर पाँच चिह्न/आकृति (पेड़, मछली, सांड, हाथी व अर्द्धचन्द्र) के चिह्न अंकित होते थे।

- इन सिक्कों पर किसी प्रकार का लेख प्राप्त नहीं होता है।
- ये सिक्के पाँचवी शताब्दी ई. पूर्व के हैं जिन पर उस समय के प्राकृतिक चिह्न तथा देवी देवताओं के चित्र मिलते हैं।
- इन सिक्कों को आहत मुद्रा नाम जेम्स प्रिंसेप द्वारा 1835 ई. में दिया गया।
- राजपूताना की रियासतों में प्रचलित सिक्कों के सम्बन्ध में केब ने वर्ष 1893 में 'द करेंसीज ऑफ द हिन्दू स्टेट्स ऑफ राजपूताना' नामक पुस्तक लिखी।

**इण्डो-ग्रीक मुद्राएँ** :- भारत में सर्वप्रथम लेखयुक्त सोने के सिक्के भारतीय-यवन (इण्डो-ग्रीक) शासकों ने जारी किये थे जो तीसरी-चौथी शताब्दी ईस्वी पूर्व के हैं।

- आहड़ में उत्खनन से इण्डो-ग्रीक सिक्के मिले हैं, जिनमें अपोलो, देवता, महाराज **नत्रवर्स**, विरहम विस तथा पलितस आदि अंकित हैं।
- सिक्कों के सम्बन्ध में 'क्रोनिकल्स ऑफ द पठान किंग्स ऑफ डेहली' नामक पुस्तक "एडवर्ड थॉमस" ने लिखी है।

**आहड़ से प्राप्त सिक्के** :- आहड़ से 6 ताँबे की मुद्राएँ मिली हैं।

- इसके अलावा यहाँ से इण्डो-ग्रीक मुद्राएँ तथा कुछ मुहरें प्राप्त हुई हैं।

**रैढ़ (टोंक) से प्राप्त सिक्के** :-

- रैढ़ में उत्खनन से 3075 चाँदी के पचंमार्क सिक्के मिले हैं जो देश में उत्खनन से प्राप्त सिक्कों की सर्वाधिक संख्या है।
- ये सिक्के मौर्यकाल के हैं जिन्हें 'धरण' या 'पण' कहा जाता था।
- इन सिक्कों का वजन 57 ग्रेन (32 रत्ती या $3^{3}/_{4}$ ग्राम) है तथा इनका समय छठी शताब्दी ई. पूर्व से द्वितीय शताब्दी ई. पूर्व है।
- रैढ़ से प्राप्त इन सिक्कों को मालव, मित्र, इण्डो सेसेनियम, सेनापति आदि वर्गों में रखा गया है।
- रैढ़ सभ्यता पर उत्खनन का कार्य 1938-39 में दयाराम साहनी के नेतृत्व में तथा अंतिम रूप में उत्खनन कार्य डॉ. केदारनाथ पूरी के द्वारा करवाया गया था।
- रैढ़ सभ्यता से एशिया का अब तक का सबसे बड़ा सिक्कों का भण्डार मिला है।

**बैराठ से प्राप्त सिक्के** :-

- बैराठ में उत्खनन से कपड़े में बंधी हुई 8 आहत मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं।
- इसके अलावा यहाँ से 28 इण्डो-ग्रीक तथा यूनानी मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं जिसमें से 16 सिक्के यूनानी शासक मीनेण्डर के हैं।

**प्रश्न- निम्नलिखित में से किस स्थल से शासक मिनेण्डर के सोलह सिक्के प्राप्त हुए हैं ?(RAS. 2018)**

**(1) बैराठ** **(2) नगरी**
**(3) रैढ़** **(4) नगर**

**Ans. 1**

**रंगमहल से प्राप्त सिक्के** :-

- रंगमहल (हनुमानगढ़) से 105 ताँबे के सिक्के प्राप्त हुए हैं, जिनमें आहत तथा कुषाण कालीन मुद्राएँ शामिल हैं।
- यहाँ से प्राप्त कुषाण कालीन सिक्कों को मुरण्डा कहा गया है।
- रंगमहल से कुषाण शासक कनिष्क का भी सिक्का प्राप्त हुआ है।

**सांभर से प्राप्त सिक्के** :-

- सांभर (जयपुर ग्रामीण) में उत्खनन से 200 मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं जिनमें पंचमार्क तथा इण्डो सेसेनियम मुद्राएँ शामिल हैं।
- सांभर के उत्खनन में चाँदी की एक इण्डो-ग्रीक मुद्रा मिली है जो 'एंटीयोकस निकेफोरस' की है।
- यहाँ से यौधेय जनपद की तथा इण्डो-ग्रीक मुद्राएँ भी प्राप्त हुई है। एक यौधेय सिक्के पर ब्राह्मी लिपि में **'बाबुधना'** तथा 'गण' अंकित है।

**नगर (टोंक) से प्राप्त सिक्के** :-

- टोंक जिले के नगर या कर्कोट नगर से कार्लाइल को लगभग 6 हजार ताँबे के सिक्के प्राप्त हुए थे।
- यह अनुमान लगाया जाता है कि मालव जनपद की टकसाल नगर (वर्तमान जयपुर ग्रामीण) में रही होगी।
- ये सिक्के अन्य सिक्कों की तुलना में सबसे छोटे तथा हल्के हैं।
- इन पर ब्राह्मी लिपि में मालव जनपद के लगभग 40 सरदारों के नाम अलग-अलग अंकित मिलते हैं।

**यौधेय जनपद के सिक्के** :-

- राजस्थान के प्राचीन समय के उत्तरी-पश्चिमी भाग में स्थित यौधेय जनपद से सिक्के मिले हैं।
- यौधेय जनपद का विस्तार वर्तमान गंगानगर, हनुमानगढ़, अनूपगढ़ और बीकानेर का कुछ भाग में था।

- इन सिक्कों पर नंदी एवं स्तंभ का अंकन तथा ब्राह्मी लिपि में 'यौधेयानां बहुधान' लिखा हुआ मिला है।
- ईसा की दूसरी सदी के सिक्कों पर एक ओर कमल पर षडानन की मूर्ति तथा दूसरी ओर ब्राह्मी लिपि में 'भागवत: यौधेयेन' अंकित है। चौथी सदी ईसा के सिक्कों में 'कार्तिकेय' या 'देव' या 'सूर्य की मूर्ति' का अंकन मिलता है।

**गुप्तकालीन मुद्राएँ :-**

- 1948 में भरतपुर जिले की बयाना तहसील के नगलाछैल गाँव से सर्वाधिक गुप्तकालीन स्वर्ण मुद्राएँ प्राप्त हुई है जिनकी संख्या लगभग 1800 है।
- इन सिक्कों में सर्वाधिक सिक्के 'चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य' के समय के हैं।
- इसके अलावा राजस्थान में बुन्दावली का टीबा (जयपुर ग्रामीण), नलियासर (सांभर), ग्राम-मारोली (जयपुर ग्रामीण), रैढ़ (टोंक), अहेड़ा (अजमेर), देवली (टोंक) तथा सायला आदि से गुप्तकालीन मुद्राएँ प्राप्त हुई है।
- सायला से समुद्रगुप्त की 13 स्वर्ण मुद्राएँ प्राप्त हुई है जिनके अग्रभाग पर समुद्रगुप्त ध्वज लिए खड़ा है। ये सिक्के **ध्वज शैली** के हैं।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के **छत्र शैली** के स्वर्ण के सिक्के मिले है जिनसे यह संकेत मिलता है कि टोंक के आस-पास का क्षेत्र गुप्त साम्राज्य का अंग रहा होगा।
- सायला से ही चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के धनुर्धर शैली के सिक्के भी मिले हैं।

**गुर्जर-प्रतिहार कालीन मुद्राएँ :-**

- मारवाड़ क्षेत्र से प्राप्त गुर्जर प्रतिहार कालीन सिक्कों पर से सेसेनियन शैली का प्रभाव दिखाई देता है।
- राजस्थान में गुर्जर प्रतिहार शासक मिहिर भोज तथा विनायकपाल देव के 'आदिवराह द्रम्म' नामक सिक्के प्राप्त हुए हैं।
- ठक्कर फेरू (अलाउद्दीन की दिल्ली टकसाल का अधिकारी) ने अपनी पुस्तक 'द्रव्य परीक्षा' में इन सिक्कों को वराही द्रम्म एवं विनायक द्रम्म नाम दिया है। जिन पर देवनागरी लिपि में 'श्री मदादि वराह' एवं नरवराह की मूर्ति का अंकन है।
- प्रतिहारों के आदिवराह, वराहनाम वाले द्रम्म तथा देवी मूर्ति, वृषभ, मत्स्य एवं अश्वारोही अंकन वाले सिक्के भी मिले हैं।
- मारवाड़ से अनेक गुर्जर-प्रतिहार कालीन ताँबे के सिक्के प्राप्त हुए हैं। इन पर राजा के अर्द्ध शरीर का चिह्न तथा यज्ञकुण्ड बना है, इन पर ये चिह्न अस्पष्ट होने के कारण गधे के मुँह के समान अंकन दिखाई देता है इसलिए इनका नाम 'गधिया सिक्के' पड़ा है।

**चौहान काल की मुद्राएँ :-**

- राजस्थान में चौहान काल के चाँदी व ताँबे के सिक्के मिले है जिन्हें **'द्रम्म'**, **'विशोपक'**, **'रूपक**, **'दीनार'** आदि के नाम से जाना गया।
- अजयदेव चौहान की रानी सोमलेखा द्वारा चाँदी के सिक्के एवं सोमेश्वर द्वारा वृषभ शैली एवं अश्वारोही शैली के सिक्के चलाए गए।
- तराइन के दूसरे युद्ध में विजय के बाद "मुहम्मद गौरी" ने सिक्कों पर अपना नाम 'मुहम्मद बिन साम' अंकित करवाया। इसके अलावा इन सिक्कों पर 'नंदी' तथा 'पृथ्वीराज' के नाम का अंकन मिलता है।
- इसके अलावा सिक्कों के अतिरिक्त पृष्ठ पर देवनागरी में हम्मीर का नाम भी अंकित करवाया गया है।

**मेवाड़ राज्य के सिक्के :-**

- मेवाड़ में प्राचीन काल से ही सोने, चाँदी एवं ताँबे के सिक्के चलते थे जो इण्डो-सेसेनियन शैली के थे।
- चाँदी के सिक्कों को 'द्रम्म' व 'रूपक' तथा ताँबे के सिक्कों को 'कार्षापण' कहा जाता था।
- पुराने सिक्कों पर कोई लेख नहीं होता था। इसी प्रकार ताँबे का सिक्का 'ढींगला' है।
- नगरी से प्राप्त चाँदी व ताँबे के सिक्कों पर एक ओर 'शिवि जनपद' अंकित है। यहीं से यूनानी शासक मिनेण्डर के 'द्रम्म' सिक्के भी मिले हैं।
- मेवाड़ के कई स्थानों से हूणों द्वारा चलाए गए चाँदी व ताँबे के गधिया सिक्के मिले हैं।
- गुहिल वंश के संस्थापक गुहिल द्वारा जारी दो हजार चाँदी के सिक्के आगरा से प्राप्त हुए हैं।
- मालवा परमार शासकों द्वारा प्रचलित चाँदी के 'पारुथ द्रम्म' सिक्के भी मेवाड़ से प्राप्त हुए हैं।
- मेवाड़ में 'मुहम्मद बिन साम' तथा सुरातिन समस्दीन नाम वाले सिक्के तथा अश्वारोही-नंदी शैली के सिक्के प्रचलित थे। इन सिक्कों को टका एवं दिरहम नाम से जाना जाता था।
- महाराणा स्वरूपसिंह ने अंग्रेजों से संधि कर स्वरूपशाही सिक्के चलाये जिनके एक तरफ चित्रकुट-उदयपुर व चित्तौड़दुर्ग की प्राचीर के चित्र का अंकन है तथा दूसरी ओर **'दोस्ती-लंधन'** अर्थात् (लंदन के मित्र) अंकित था। इनके समय चांदोड़ी स्वर्ण मुहर भी प्रचलित थी।
- स्वरूप शाही मुहर का वजन 100 ग्रेन होता था।
- मेवाड़ में उदयपुरी, चित्तौड़ी, भीलाड़ी एवं एलची सिक्के मुग़ल प्रभाव वाले सिक्के थे।
- चित्तौड़ी की टकसाल में मुग़ल सम्राट अकबर एवं अन्य मुग़ल सम्राटों के सिक्के भी बनते थे जिन्हें 'सिक्का एलची' कहते थे।
- मेवाड़ में प्रचलित ताँबे के सिक्कों को ढींगला, भिलाड़ी, त्रिशुलिया, भींडरिया एवं नाथद्वारिया आदि नामों से जाना जाता था।
- शाहपुरा में बनने वाले सोने-चाँदी के सिक्के ग्यार-संदा तथा ताँबे के सिक्के माधोशाही कहलाते थे।
- मेवाड़ के सलूम्बर ठिकाने का सिक्का पद्मशाही नाम से जाना जाता था।

## अभ्यास प्रश्न

**1. किस शिलालेख मे चौहानो को वत्स गौत्र का ब्राह्मण कहा गया है ?**
(a) आमेर का शिलालेख
(b) श्रृंगी ऋषि का शिलालेख
(c) बिजौलिया का शिलालेख
**(d)** चीरवे का शिलालेख **उत्तर- c**

**2. डोडिया तथा अवैशाही सिक्का का प्रचलन कहाँ पर था?**
(a) बीकानेर (b) जोधपुर
**(e)** पाली (d) जैसलमेर **उत्तर-d**

**3. दिए गये शिलालेखों/प्रशस्तियों को उनके समय के अनुसार (पहले से बाद में) क्रमबद्ध करें ।**
a. मंडोर का बाउक का शिलालेख
b. सांडेराव के महावीर जैन मंदिर का अभिलेख
c. चितौड़ का शिलालेख
d. आहड़ के आदिवराह मंदिर से प्राप्त शिलालेख
a. a, c, b, d
b. d, a, b, c
c. a, d, b, c
d. d, a, c, b **उत्तर - c**

**4. पद्मशाही मुद्रा कहाँ प्रचलित थी ?**
(a) शाहपुरा (b) किशनगढ़
(c) सलूम्बर (d) ब्यावर **उत्तर -c**

**5. राज्य में प्राप्त एक मध्यकालीन प्रशस्ति के संबंध में निम्न कथनों पर गौर कीजिए**
I. यह 17वीं शताब्दी में महाराजा राजसिंह द्वारा स्थापित कराई गई।
II. इसमें राजसमंद झील का निर्माण अकाल राहत कार्यों के तहत किए जाने का उल्लेख है।
III. यह भारत का सबसे बड़ा शिलालेख है। उक्त प्रशस्ति कौनसी है?
(a) राज प्रशस्ति
(b) सामोली का शिलालेख
(c) नाथ प्रशस्ति
(d) चीखा का लेख **उत्तर -a**

**6. निम्न में से कौनसा शिलालेख राजस्थान का प्राचीनतम शिलालेख कहलाता है?**
(a) नगरी का शिलालेख
(b) सामोली का शिलालेख
(c) किराडू का शिलालेख
**(b)** बरली का शिलालेख **उत्तर-d**

**7. सांडेराव का लेख कंहा से यह शिलालेख प्राप्त हुआ ।**
(a) भीलवाड़ा (b) पाली
(c) चित्तौड़गढ़ (d) जोधपुर **उत्तर-b**

**8. राजस्थान के कौन से ताम्रपत्र से रानी कर्मवती द्वारा जौहर के प्रमाण मिलते हैं -**
(a) आहड ताम्रपत्र (b) खेरोदा ताम्रपत्र
(c) पुर ताम्रपत्र (d)चीकली ताम्रपत्र
**उत्तर-c**

**9. आहड़ के ताम्रपत्र ( 1206) से हमें जानकारी मिलती है -**
(a) महाराणा कुम्भा ने कीर्तिस्तम्भ का निर्माण करवाया था ।
(b) महाराणा राजसिंह ने राजसमंद झील का निर्माण करवाया था ।
(c) गुजरात के शासक भीमदेव के समय में मेवाड़ पर गुजरात का अधिकार था ।
(d) किसानों से वसूल की जाने वाली विविध लाग - बागों का पता चलता है ।
**उत्तर -c**

**10. मुण्डीयार की ख्यात मे किसका वर्णन है?**
(a) आमेर के कछवाह शासको का वर्णन है
(b) मारवाड के राठौड शसको का वर्णन है
(c) कोटा के हाडा शासको का वर्णन है
(d) मेवाड के सिसोदिया शासको का वर्णन है
**उत्तर -b**

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

## अध्याय – 2

## प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)

- **पाषाणकालीन सभ्यता**

**I. बागौर (भीलवाड़ा)**

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है।
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लधु अश्म उपकरण-Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे। ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं।
- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी।
- **बागौर उत्खनन** में कुल **5 कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृद्भाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृद्भाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृद्भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृद्भाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)
- **मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण** में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।
- बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक

निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।

**कांस्ययुगीन सभ्यताएं -**

**2. कालीबंगा की सभ्यता -**

कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है - **सरस्वती नदी** । इसे **द्रेषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं।

यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

**इस सभ्यता की खोज -**

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरीथे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता **अमलानंद घोष** हैं। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

**1. बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
**2. बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

**एल.पी. टेस्सिटोरीके बारे में -**

- ये इटली के के निवासी थे। इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए। जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये। बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1.पूर्वी राजस्थानी 2.पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - **"काले रंग की चूड़ियां"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।
- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी। यह संग्रहालय **हनुमानगढ़** जिले में स्थित है।

**इस सभ्यता की विशेषताएँ -**

- इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को **समकोण** पर काटती थी। इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को **"ऑक्सफोर्ड पद्धति"** कहते हैं। इसी पद्धति को **'जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति'** के नाम से भी जानते हैं।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में यें कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं। इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है।
- इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे।
- यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था।
  (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियाँ मिली है वह कालीबंगा स्थल है) **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- विश्व की प्राचीनतम **जुते हुए खेत** के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।
- यहाँ पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।
- यहाँ के लोग एक साथ में **दो फसलें** करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं **जौ और गेहूं।**
- यहाँ पर उत्खनन के दौरान **यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं** प्राप्त हुए हैं यहाँ के लोग **बलिप्रथा** में भी विश्वास रखते थे।
- इस सभ्यता का पालतू जीव **कुत्ता** था। इस सभ्यता के लोग **ऊँट** से भी परिचित थे इसके अलावा **गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से** भी परिचित थे।
- विश्व में प्राचीनतम् नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे **नगरीय सभ्यता** भी कहते हैं यहाँ पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।
- यहाँ पर समाधि प्रथा का प्रचलन था। यहाँ पर **समाधि तीन प्रकार** की मिलती हैं अर्थात् तीन प्रकार से मृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था
- अंडाकार गड्डा खोदकर व्यक्ति को दफनाना। इस गड्डे में व्यक्ति का सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की ओर होते थे।
- अंडाकार गड्डा खोदकर व्यक्ति को तोड़ मरोड़ कर इकट्ठा करके दफनाना।
- एक गड्डा खोदकर व्यक्ति के साथ आभूषण को दफनाना।
- **स्वास्तिक चिह्न** का प्रमाण इसी कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त होता है इस स्वास्तिक चिह्न का प्रयोग यहाँ के लोग वास्तुदोष को दूर करने के लिए करते थे।
- कालीबंगा की सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता की **समानता** के प्रमाण **बेलनाकार बर्तन** में मिलते हैं।

- यहाँ पर एक **कपाल** मिला है **जिसमें छः प्रकार के छेद** थे। जिससे अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ के लोग **शल्य चिकित्सा** से परिचित थे अर्थात् शल्य चिकित्सा के प्राचीनतम प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।
- यहाँ पर एक सिक्का प्राप्त हुआ है जिसके एक ओर स्त्री का चित्र है तथा दूसरी ओर **चीता** का चित्र बना हुआ है अर्थात् अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ पर परिवार की **मातृसत्तात्मक प्रणाली** का प्रचलन था।
- कालीबंगा सभ्यता को सिंधु सभ्यता की **तीसरी राजधानी** कहा जाता है।
- कालीबंगा सभ्यता में पुरोहित का प्रमुख स्थान होता था।
- इस सभ्यता के लोग मध्य एशिया से व्यापार करते थे, इसका प्रमाण **सामूहिक तंदूर** से मिलता है क्योंकि तंदूर मध्य-एशिया से संबंधित है।
- इस सभ्यता के भवनों का **फर्श सजावट** एवं अलंकृत के रूप में मिलता है।

**कालीबंगावासियों का सामाजिक जीवन**

- उत्खनन से अनुमान लगाया जाता है कि कालीबंगा के समाज में धर्मगुरु (पुरोहित), चिकित्सक, कृषक, कुंभकार, बढ़ई, सुनार, दस्तकार, जुलाहे, ईंट एवं मनके निर्माता, मुद्रा (मोहरें) निर्माता, व्यापारी आदि धन्धों के लोग निवास करते थे।
- कालीबंगा वासियों के नागरिक जीवन में त्यौहार एवं धार्मिक उत्सवों का पर्याप्त महत्त्व था। इसके साथ ही खिलौने, पासे, मत्स्य काँटे आदि के अवशेषों से अनुमान है कि इनके जीवन में मनोरंजन का पर्याप्त महत्व था। संभवत: ये **शाकाहारी एवं मांसाहारी** दोनों होते थे। खाद्य सामग्रियों में फल, फूल, दूध, दही, जौं, गेहूँ, मांस आदि का प्रयोग होता था।

**मृतक संस्कार :**

कालीबंगा के निवासियों की **तीन प्रकार** की **समाधियाँ (कब्रें)** मिली हैं।

- शवों को अण्डाकार गड्ढे में उत्तर की ओर सिर रखकर मृत्यु संबंधी उपकरणों के साथ गाड़ते थे।
- दूसरे प्रकार की समाधियों में **शव की टाँगे समेटकर** गाड़ा जाता था।
- तीसरे प्रकार में शव के साथ बर्तन और एक-एक सोने व मणि के दाने की माला से विभूषित कर गाड़ा जाता था।
- उत्खनन में जो शवाधान प्राप्त हुए हैं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे मृत्युपरांत किसी न किसी प्रकार का विश्वास अवश्य रखते थे, क्योंकि मृतकों के साथ खाद्य सामग्री, आभूषण, मनके, दर्पण तथा विभिन्न प्रकार के मदभाण्ड आदि रखे जाते थे।
- यहाँ मोहनजोदड़ो की भाँति लिंग, मातृशक्ति आदि की **मूर्तियाँ** नहीं मिली है, जिससे यहाँ के निवासियों की धार्मिक भावना का पता नहीं चल पाया है। यहाँ की **लिपि दाँये से बाँये** लिखी प्रतीत होती है साथ ही अक्षर एक-दूसरे के ऊपर खुदे हुए प्रतीत होते हैं।

**आर्थिक जीवन :**

- कालीबंगा के भग्नावशेषों से अनुमान लगाया जा सकता है कि अधिकांश लोगों का जीवन सामान्य रूप से समृद्ध था। सुख एवं समृद्धि के लिए लोगों ने विभिन्न साधनों का उपयोग किया था।
- कालीबंगा के निवासी कौन-कौन से पशु पालते थे, इसका ज्ञान हमें पशुओं के अस्थि अवशेषों, मृद पात्रों पर किये गये चित्रांकनों, मुद्रांकनों तथा खिलौनों से होता है। ये भेड़-बकरी, गाय, भैंस, बैल, भैंसा तथा सुअर आदि पशुओं को पालते थे। कालीबंगा के निवासी ऊँट भी पालते थे। कुत्ता भी उनका पालतू जीव था।
- **सरस्वती दृषद्वती नदियों** द्वारा लाई जाने वाली मिट्टी कृषि जन्य उत्पादों के लिए बहुत उपजाऊ थी। इसमें वे जौं और गेहूँ की खेती करते थे। हल लकड़ी के रहे होंगे। सिंचाई के लिए नदी जल एवं वर्षा पर निर्भर थे। कालीबंगा के कृषक निश्चय ही 'अतिरिक्त उत्पादन' करते थे।
- हड़प्पा सभ्यता के नगरों को समृद्धि का प्रमुख कारण व्यापार एवं वाणिज्य था। यह जल एवं स्थल दोनों मार्गों से होता था। **लोथल (गुजरात)** इस सभ्यता में तत्कालीन युग का एक महत्त्वपूर्ण **सामुद्रिक व्यापारिक** केन्द्र था।
- कालीबंगा से मुख्यतः हड़प्पा संस्कृति के मुख्य केन्द्रों को अनाज, मनके तथा ताँबा भेजा जाता था।
- ताँबे का प्रयोग, अस्त्र-शस्त्र तथा दैनिक जीवन में उपयोग आने वाले उपकरण, बर्तन एवं आभूषण बनाने में होता था।
- स्थानीय उद्योग पर्याप्त विकसित थे। कुंभकार का **मृदभाण्ड उद्योग** अत्यन्त विकसित था।
- वह विभिन्न प्रकार के मृदभाण्ड चाक पर बनाता था, जिन्हें भट्टों में अच्छी तरह पकाया जाता था। मृद्भाण्डों में मुख्यरूप से मर्तबान, कलश, बीकर, टस्तरियाँ, प्याले, टोंटीदार बर्तन, डिंद्रित भाण्ड एवं थालियाँ शामिल हैं। हस्त निर्मित कुछ बड़े मृदभाण्ड भी प्राप्त हुए हैं जो संभवत: अन्न आदि संग्रह हेतु काम में लिए जाते थे।
- इन मृदभाण्डों पर **काले एवं सफेद** वर्णकों से चित्रण भी किया जाता था, जिसमें आड़ी-तिरछी रेखाएँ, लूप, बिन्दुओं का समूह, वर्ग, वर्ग जालक, त्रिभुज, तरंगाकार रेखाएँ अर्द्धवृत्त, एक-दूसरे को काटते वृत्त, शल्कों का समूह आदि के प्रारूपण प्रमुख हैं।
- इसके अतिरिक्त पीपल की पत्तियों तथा चौपत्तिया फूल आदि वानस्पतिक पादपों का अंकन भी प्राप्त हुआ है।
- बड़े बर्तनों पर **'कुरेदकर'** भी **अलंकरण** किया गया है। किन्हीं-किन्हीं मृदपात्रों पर 'ठप्पे' भी लगे हुए मिले हैं और किसी-किसी पर तत्कालीन लिपि में लिखे लेख भी प्राप्त हुए हैं। उत्खनन में विभिन्न प्रकार की मुद्राएँ (मोहरें), मूर्तियाँ, चूड़ियाँ, मनके, औजार आदि से ज्ञात होता है कि हड़प्पा सभ्यता कालीन कालीबंगा समाज में शिल्पकला का उचित स्थान रहा है।
- सोना, चाँदी अर्द्ध बहुमूल्य पत्थर, शंख से आभूषणों का निर्माण किया जाता था। स्त्रियाँ कानों में कर्णाभरण,

**राठौड़ों का प्राचीन इतिवृत :-**

राम के पुत्र कुश के कुल में सुमित्र अयोध्या का अंतिम राजा था। नंदवंश के महापद्मनंद ने अयोध्या राज्य को मगध साम्राज्य में मिला लिया। सुमित्र के बाद यशोविग्रह तक के मुख्य व्यक्तियों के नाम ही बडुवों (बहीभट्टों) की बहियों से तथा अन्य साहित्यिक स्त्रोतों से प्राप्त होते हैं। अतः इन साधनों के आधार पर सुमित्र से आगे की वंश परम्परा दी जा रही है। सुमित्र के दो वंशजों में कूर्म के वंशज रोहितास (बिहार), निषिध, ग्वालियर और नरवर होते हुए राजस्थान में आये जो कछवाह कहलाते हैं। दूसरे वंशज विश्वराज के वंशधर क्रमशः मूलराय व राष्ट्रवर के नाम से इनके वंशज राष्ट्रवर (राठौड़) कहलाये। बाद के संस्कृत साहित्य में कहीं कहीं राष्ट्रवर (राठौड़ों) का संस्कृतनिष्ठ शब्द 'राष्ट्रकूट' या 'राष्ट्रकूटियों' भी लिखा है।

**सूरज प्रकाश के लेखक करणीदान व टॉड के अनुसार तेरह खाँपों की उत्पत्ति इस प्रकार हुई –**

1. **दानेश्वरा :-** धर्मविम्ब एक दानी व्यक्ति हुआ। अतः इनके वंशज **दानेश्वरा** कहलाये। (Annals and antiqueties of raj-अनुसार केवल कुमार ठाकुर) इनको **कमधज** भी कहा जाता था।
2. **अभैपुरा :-** पुंज के दूसरे पुत्र भानुदीप कांगड़ा (हि. प्र.) के पास था। देवी ज्वालामुखी ने उसे अकाल के भय से रहित कर दिया अर्थात् अभय बना दिया। इस कारण उसके वंशज अभैपुरा कहलाये।
3. **कपालिया :-** पुंज के तीसरे पुत्र वीरचंद थे। इसने शिव को कपाल चढ़ा दिया था। इस कारण इनके वंशज कपालिया कहलाये।
4. **कुरहा :-** पुंज के पुत्र अमरविजय ने परमारों से कुरहगढ़ जीता। संभवतः कुरह स्थान के नाम से **कुरहा** कहलाये।
5. **जलखेड़ा :-** पुंज के पुत्र सजनविनोद ने तंवरों को परास्त किया और जलंधर की सहायता से जल प्रवाह में बहा दिया। अतः इसके वंशज जलखेड़ा कहलाये।
6. **बुगलाणा :-** पुंज के पुत्र पद्म बुगलाणा स्थान के नाम से बुगलाणा कहलाये।
7. **अहर :-** पुंज के पुत्र अहर के वंशज 'अहर' कहलाये। बंगाल की तरफ चले गए।
8. **पारकरा :-** पुंज के पुत्र वासुदेव ने कन्नौज के पास कोई पारकरा नामक नगर बसाया अतः उसके वंशज **'पारकर'** कहलाये।
9. **चंदेल :-** दक्षिण में पुंज के पुत्र उग्रप्रभ ने चंदी व चंदावर नगर बसाये अतः चंदी स्थान के नाम से चंदेल कहलाये। (चंदेल-चंद्रवंशी इनसे भिन्न हैं।)
10. **वीर :-** सुबुद्धि या मुक्तामान बड़ा वीर हुआ। इसे वीर की उपाधि दी। इस कारण इनके वंशज वीर राठौड़ कहलाये।
11. **दरियावरा :-** भरत ने बरियावर स्थान पर राज्य किया। स्थान के नाम से ये 'बरियावर' कहलाये।
12. **खरोदिया :-** कृपासिंधु (अनलकुल) खरोदा स्थान के नाम से खरोदिया राठौड़ कहलाये।
13. **जयवंशी :-** चंद्र व इसके वंशज जय पाने के कारण जयवंशी कहलाये।

## मारवाड़ का इतिहास

**राठौड़ वंश**

राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है । उसे मारवाड़ के नाम से जाना जाता है । मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था । प्रतिहार यहाँ से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये । फिर राठौड़ वंश की स्थापना इस भाग में हुई, तथा मारवाड़ की संकटकालीन राजधानी 'सिवाना दुर्ग' (बालोतरा) को कहा जाता था।

| शाखा | स्थापना | संस्थापक |
|---|---|---|
| 1- मारवाड़ (जोधपुर) | 1240 ई. | राव सीहा |
| 2. बीकानेर | 1465 ई. | राव बीका |
| किशनगढ़ | 1609 ई. | किशनसिंह |

हम इस अध्याय में मारवाड़ के राठौड़ वंश का विस्तृत अध्ययन करेंगे ।

**उत्पत्ति**

- राठौड़ शब्द की उत्पत्ति राष्ट्रकूट शब्द से मानी जाती है।
- पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं ।
- "राठौड़ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है ।
- डॉ. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है । इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया है।
- डॉ. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना है ।

**मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)**

- राव सीहा जी राजस्थान में स्वतंत्र राठौड़ राज्य के संस्थापक थे । राव सीहा जी के वीर वंशज अपने शौर्य, वीरता एवं पराक्रम व तलवार के धनी रहे हैं । मारवाड़ में राव सीहा जी द्वारा राठौड़ साम्राज्य का विस्तार करने में उनके वंशजो में राव धुहड़ जी, राजपाल जी, जालन सिंह जी, राव छाड़ा जी, राव तीड़ा जी, खीम करण जी, राव वीरम दे, राव चूँड़ा जी,

राव रिड़मल जी, राव जोधा, राव बीका, बीदा, दूदा, कानध्ल, मालदेव का विशेष क्रमबद्ध योगदान रहा है। इनके वंशजों में दुर्गादास व अमर सिंह जैसे इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हुए । राव सिहा सेतराम जी के आठ पुत्रों में सबसे बड़े थे।

**चेतराम सम्राट के, पुत्र अस्ट महावीर !**
**जिसमें सिहों जेस्ठ सूत, महारथी रणधीर ।**

- राव सीहा जी सं. 1268 के लगभग पुष्कर की तीर्थ यात्रा के समय मारवाड़ आये थे उस मारवाड़ की जनता मीणों, मेरों आदि की लूटपाट से पीड़ित थी, राव सिहा के आगमन की सूचना पर पाली नगर के पालीवाल ब्राह्मण अपने मुखिया जसोधर के साथ सीहा जी मिलकर पाली नगर को लूटपाट व अत्याचारों से मुक्त करने की प्रार्थना की । अपनी तीर्थ यात्रा से लौटने के बाद राव सीहा जी ने भाइयों व फलौदी के जगमाल की सहायता से पाली में हो रहे अत्याचारों पर काबू पा लिया एवं वहां शांति व शासन व्यवस्था कायम की, जिससे पाली नगर की व्यापारिक उन्नति होने लगी।

**आठों में सीहा बड़ा, देव गरुड़ है साथ ।**
**बनकर छोडिया कन्नोज में, पाली मारा हाथ ।**
**पाली के अलावा भीनमाल के शासक के अत्याचारों की जनता की शिकायत पर जनता को अत्याचारों से मुक्त कराया ।**
**भीनमाल लिधी भडे,सिहे साल बजाया।**
**दत दीन्हो सत सग्रहियो, ओजस कठे न जाया।**

- पाली व भीनमाल में राठौड़ राज्य स्थापित करने के बाद सीहा जी ने खेड़ पर आक्रमण कर विजय कर लिया।
- इसी दौरान शाही सेना ने अचानक पाली पर हमला कर लूटपाट शुरू करदी, हमले की सूचना मिलते ही सीहा जी पाली से 18 किलोमीटर दूर बिठू गावं में शाही सेना के खिलाफ आ डटे, और मुस्लिम सेना को खधेड़ दिया । वि. सं. 1330 कार्तिक कृष्ण द्वादशी सोमवार को करीब 80 वर्ष की उम्र में सीहा जी का स्वर्गवास हुआ व उनकी सोलंकी रानी पार्वती इनके साथ सती हुई ।
- सीहा जी की रानी (पाटन के शासक जय सिंह सोलंकी की पुत्री) से बड़े पुत्र आसनाथ जी हुए जो पिता के बाद मारवाड़ के शासक बने । राव सिहं जी राजस्थान में राठौड़ राज्य की नींव डालने वाले पहले व्यक्ति थे ।

**<u>आसनाथ (1273 – 1291 ई.)</u>**

- सीहा के बाद आसनाथ राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँदोच को केन्द्र बनाया। 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आसनाथ 1291 ई. में वीरगति को प्राप्त हुआ ।
- आसनाथ के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी नागणेचीद्ध की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई ।
- इनके छोटे भाई का नाम धांधलश् था। ये लोक देवता पाबू जी के पिता थे।

**<u>राव चूँड़ा (1383 – 1423)</u>**

- राव चूँड़ा विरमदेव का पुत्र था ।
- राव चूँड़ा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता है। अपने पिता की मृत्यु के समय चूँड़ा छः वर्ष का था । इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूँड़ा को सालोड़ी गाँव जागीर में दी थी।
- उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी (मण्डौर ए जोधपुर) से विवाह किया तथा दहेज में उसे मण्डौर दुर्ग मिला ।
- चूँड़ा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डौर को मालवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डौर को अपनी राजधानी बनाया।
- इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूँड़ा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।
- उसने जलाल खाँ खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था ।
- परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगल प्रदेश के सांखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूँड़ा मारा गया ।
- राव चूँड़ा ने डीडवाना-कुचामन में चूण्डासर कस्बा बसाया।
- उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँद बावड़ी का निर्माण करवाया था ।

**<u>रावल मल्लिनाथ</u>**

राजस्थान के प्रसिद्ध लोक देवता हैं इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा, बालोतरा) बनायी। मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं ।

- भाई 'वीरम' (मल्लीनाथ ने अपने बेटे जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।)

**<u>कान्हा (1423 – 1427)</u>**

चूँड़ा ने अपनी मोहिलाणी रानी के प्रभाव में आकर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जबकि रणमल, चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था।

- रणमल मेवाड़ के राणा लाखा की शरण में चला गया तथा अपनी बहन हंसाबाई का विवाह लाखा से कर दिया। राणा ने उसे धणला गाँव जागीर में दिया।
- 1427 ई. में रणमल ने राणा मोकल की सहायता से मण्डौर पर अधिकार कर लिया। इस समय कान्हा का उत्तराधिकारी सत्ता मण्डौर का शासक था।
- ऐसा कहा जाता है कि राव कान्हा की मृत्यु 'करणी माता के हाथों हुई थी ।

**<u>राव रणमल - ( 1427 – 1438)</u>**

राव रणमल, राव चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था जो उन्हें रानी चाँद कँवर से हुआ था ।

- परन्तु जब उसे राजा नहीं बनाया गया तो वह नाराज होकर मेवाड़ के राणा लक्ष सिंह (लाखा) की शरण में चला गया।
- राणा लाखा ने रणमल को 'धणला' की जागीर प्रदान की ।

## अध्याय - 6
## आधुनिक राजस्थान

| राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क्र. सं. | संधिकर्त्ता राज्य | संधि के समय शासक | संधि की तिथि | अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि |
| 1. | करौली | हरबक्षपालसिंह | 9 नवम्बर, 1817 | खिराज से मुक्त |
| 2. | टोंक | अमीर खाँ | 15 नवम्बर, 1817 | - |
| 3. | कोटा | उम्मेद सिंह | 26 दिसम्बर, 1817 | 2,44,700 रु. |
| 4. | जोधपुर | मानसिंह | 6 जनवरी, 1818 | 1,08,000 रु. |
| 5. | उदयपुर | भीमसिंह | 22 जनवरी, 1818 | राज्य की आय का 1/4 भाग |
| 6. | बूँदी | विसनसिंह | 10 फरवरी, 1818 | 80,000 रु. |
| 7. | बीकानेर | सूरतसिंह | 21 मार्च, 1818 | मराठों को खिराज नहीं देता था, इसलिए खिराज से मुक्त |
| 8. | किशनगढ़ | कल्याणसिंह | 7 अप्रैल , 1818 | खिराज से मुक्त |
| 9. | जयपुर | जगतसिंह | 15 अप्रैल , 1818 | संधि के प्रथम वर्ष कुछ नहीं, दूसरे वर्ष 4 लाख, चौथे वर्ष 6 लाख, पाँचवें वर्ष 7 लाख, छठें वर्ष 8 लाख फिर 8 लाख निश्चित। |
| 10. | जैसलमेर | मूलराज | 2 जनवरी, 1819 | मराठों को खिराज नहीं देता था, अतः खिराज से मुक्त। |
| 11. | प्रतापगढ़ | सामन्तसिंह | 5 अक्टूबर, 1818 | धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को। |
| 12. | डूंगरपुर | जसवन्त सिंह द्वितीय | 1818 ई. | धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को। |
| 13. | बाँसवाड़ा | उम्मेदसिंह | 25 दिसम्बर, 1818 | धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को। |
| 14. | सिरोही | शिवसिंह | 11 सितम्बर, 1823 | संधि के तीन वर्ष तक खिराज से मुक्त उसके बाद आय के प्रति रुपये पर छः आना। |
| 15. | झालावाड़ | मदनसिंह | 10 अप्रैल, 1838 | 80,000 रु. वार्षिक। |

| राजस्थान में प्रजामण्डल | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्र. सं. | प्रजामण्डल नाम | स्थापना वर्ष | गठनकर्ता | अध्यक्षता | प्रमुख नेता/ उद्देश्य कार्य/सहयोगी |
| 1. | जयपुर प्रजामण्डल | 1931 | जमनालाल बजाज | कपूर चन्द्र पाटनी | हीरालाल शास्त्री, जमनालाल बजाज |
| | | 1936 | | | हीरालाल शास्त्री, बाब हरिश्चन्द्र, टीकाराम पालीवाल, लादूराम जोशी, हंस डी. राय. पूर्णानन्द जोशी |
| 2. | बूँदी प्रजामण्डल | 1931 | कांतिलाल | कांतिलाल | नित्यानन्द सागर, गोपाललाल कोटिया,गोपाललाल जोशी, मोतीलाल अग्रवाल,पूनम चन्द्र |
| | बूँदी राज्य प्रजा परिषद् | 1937 | ऋषिदत्त मेहता | चिरंजीलाल मिश्र | बृज सुन्दर शर्मा |
| 3. | हाड़ौती प्रजामण्डल | 1934 | पं. नयनूराम शर्मा | हरिमोहन माथुर | प्रभुलाल शर्मा, पं. अभिन्न हरि |
| 4. | मारवाड़ (जोधपुर) प्रजामण्डल | 1934 | जयनारायण व्यास | मोहम्मद | आनन्दराज सुराणा, मथुरादास माथुर, रणछोड़दास गट्टानी, इन्द्रमल जैन, कन्हैयालाल मणिहार, चांदकरण शारदा, छगनलाल चौपसनीवाल, अभयमल मेहता |
| 5. | सिरोही प्रजामण्डल (बम्बई) | 1934 | वृद्धिकर त्रिवेदी | भंवरलाल सराफ | रामेश्वर दयाल, समर्थमल, भीमशंकर |
| | सिरोही प्रजामण्डल | 1939 | गोकुल भाई | गोकुल भाई | धर्मचन्द्र सुराणा, रामेश्वरदयाल, रूपराज, जीवनमल, घासीलाल चौधरी, पूनमचन्द |
| 6. | बीकानेर राज्य प्रजामण्डल (कलकत्ता) | 1936 | मघाराम वैद्य | मघाराम वैद्य | लक्ष्मणदास स्वामी एवं अन्य राजस्थानी प्रवासी |
| | बीकानेर प्रजामण्डल | 1936 | मघाराम वैद्य | मघाराम वैद्य | लक्ष्मणदास स्वामी, रघुवरदयाल गोयल, बाबू मुक्ता प्रसाद, गंगाराम कौशिक |
| | बीकानेर राज्य परिषद् | 1942 | रघुवरदयाल गोयल | रघुवरदयाल गोयल | लक्ष्मणदास स्वामी, रघुवरदयाल गोयल, बाबू मुक्ता प्रसाद, गंगाराम कौशिक |
| 7. | कोटा प्रजामण्डल | 1939 | पं. नयनूराम शर्मा | पं. नयनूराम शर्मा | पं. अभिन्न हरि, तनसुखलाल मित्तल, शंभूदयाल सक्सेना, बेनी माधव प्रसाद |
| 8. | मारवाड़ लोक | 1938 | जयनारायण व्यास | रणछोड़दास | आनन्दराज सुराणा और भंवरलाल |
| 9. | मेवाड़ प्रजामण्डल | 1938 | माणिक्यलाल वर्मा | बलवंत सिंह मेहता | माणिक्य लाल वर्मा, भूरेलाल बयां, भवानी शंकर वैद्य, जमनालाल वैद्य. परसराम, दयाशंकर श्रोत्रिय |

## राजस्थान की मस्जिदें, दरगाह एवं मक़बरे

❖ **ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह (अजमेर)**

- मोईनुद्दीन चिश्ती को सूफियों का बादशाह व गरीब नवाज नाम से जाना जाता था।
- इनके गुरु का नाम हजरत शेख उस्मान' हारुनी था।
- इनकी वफात (मृत्यु) अजमेर में हुई।
- इनकी दरगाह बनाने की शुरुआत इल्तुतमिश ने की तथा पूर्ण हुमायु ने करवाया।
- यहाँ पर प्रतिवर्ष पहली रज्जब से छठवीं रज्जब तक उर्स का मेला लगता है जिसका उद्घाटन भीलवाडा का गौरी परिवार करता है।
- इस दरगाह में जामा मस्जिद का निर्माण शाहजहाँ द्वारा करवाया गया।
- अजमेर में चिश्ती की दरगाह पर नजट (भेंट) भेजने वाला प्रथम मराठा सरदार राजा साहू था, तो सुल्तान महमूद खिलजी ने अजमेर शरीफ में बुलन्द दरवाजे का निर्माण करवाया था।
- शेख मोईनुद्दीन चिश्ती की मुख्य मजार का निर्माण 1537 ई. में मांडू के सुल्तान ग्यासुद्दीन खिलजी ने करवाया था।
- इतिहासकार हरविलास शारदा के अनुसार ख्वाजा साहब की पक्की मजार 1464 ई . में बनवायी गयी जब अजमेर मालवा के सुल्तान मोहम्मद खिलजी के अधिकार में था।
- दरगाह में 75 फीट ऊँचा बुलन्द दरवाजा है।
- यहाँ अकबरी मस्जिद स्थित है।
- यहाँ दो बड़ी देग रखी हैं इनमें बड़ी देग बादशाह अकबर द्वारा (1567 ई.) और छोटी देग बादशाह जहाँगीर (1613 ई.) द्वारा भेंट की गई।
- दरगाह का मुख्य प्रवेश द्वार निजाम द्वार है जिसका निर्माण हैदराबाद के निजाम मीर उस्मान अली के द्वारा करवाया गया था।
- इसके ऊपर जो दो नगाड़े रखे हुए हैं उन्हें मुगल सम्राट अकबर ने भेंट किए थे।
- महफिल खाना का निर्माण बशीरुद्दौला द्वारा 1888 ई. में करवाया गया था। यहाँ उर्स के मौके पर कव्वाली गाई जाती है।
- अजमेर यहाँ बेगमी दालान है जिसका निर्माण बादशाह शाहजहाँ की बेटी जहाँआरा द्वारा करवाया गया ।
- मुख्य मजार के चारों ओर चाँदी का कटहरा सवाई जयसिंह ने बनवाया।
- यहाँ पर अनेक लोगों की कब्रगाह है जिनमें ख्वाजा साहब की पुत्री बीबी हाफिज जमाल, ख्वाजा मुइनुद्दीन के दो पोते, माण्डू के सुल्तान तथा भिश्ती निजामुद्दीन सिक्का की कब्रे मौजूद हैं।

❖ **हजरत शकर पीर बाबा की दरगाह (नरहड़, झुंझुनूं)**

- यह राजस्थान की सबसे बड़ी दरगाह है।
- इन्हें बांगड़ के धणी, नरहड़ के पीर कहते हैं।
- प्रतिवर्ष जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण अष्टमी) को उर्स भरता है।
- मानसिक विकलांग लोगों के मिट्टी रगड़ने से आराम मिलता है।
- यह दरगाह सांप्रदायिक सौहार्द्र का अनूठा उदाहरण है।
- फतेहपुर सीकरी के सलीम चिश्ती शक्कर पीर बाबा के ही शिष्य थे।
- इस में तीन प्रवेश द्वार हैं- (1) बुलंद दरवाजा (2) बसेती दरवाजा (3) बगली दरवाजा

❖ **शेख हमीमुद्दीन नागौरी की दरगाह (नागौर)**

- यह राजस्थान का दूसरा ख्वाजा या तारकीन सुल्तानों का फकीर या संन्यासियों का सुल्तान या हम्मीमुद्दीन नागौरी आदि नामों से विख्यात है।
- यहाँ राजस्थान का दूसरा सबसे बडा मुस्लिम मेला था तारकीन साहब का उर्स लगता है।
- ये गौरी व मोईनुद्दीन चिश्ती के साथ भारत आये थे।
- इन्हें सुल्तान - ए – तारकीन कहा जाता है।
- सुल्तान - ए - तारकीन साहब की दरगाह नागौर में गिनाणी तालाब के पास स्थित है।
- ये ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के शिष्य थे।
- 1274 ई . में नागौर में इंतकाल हो गया।
- यहाँ अजमेर के बाद दूसरा सबसे बड़ा उर्स भरता है।

❖ **सैय्यद फखरुद्दीन की दहगाह (गलियाकोट, डूंगरपुर)**

➢ इसे मजार-ए-फखरी भी कहा जाता है।
➢ यह दरगाह माही नदी के किनारे स्थित है।
➢ यह दाऊदी बोहरा संप्रदाय का प्रमुख तीर्थ स्थल है।
➢ **मीरान साहब की दरगाह (अजमेर)**

➢ यह दरगाह अजमेर दुर्ग में है।
➢ मीरान साहब का मूल नाम मीर सैय्यद हुसैन खिंगसवार था। अजमेर दुर्ग में ही मीरान साहब के घोड़े की मजार है जिस पर दाल चढ़ाकर लोग मन्नते मांगते है।
**NOTE**- मीरा साहब की दरगाह बूँदी में स्थित है।

❖ **काकाजी की दरगाह (प्रतापगढ़)**

➢ इसे कांठल का ताजमहल कहते है।

❖ **मलिक शाह की दहगाह (जालौर)**
➢ यह दरगाह जालौर दुर्ग में है जो सांप्रदायिकता के लिये जानी जाती है।
➢ इस दरगाह पर नाथ साधु भी चादर चढ़ाते हैं ।

❖ **मीठेशाह की दरगाह –गागरोंण**
❖ **सफदरजंग की दरगाह - अलवर**
❖ **अलाउद्दीन आलमशाह की दरगाह –तिजारा (खैरथल-तिजारा)**
❖ **तन्हा पीर की दरगाह –मण्डोर**
❖ **कबीर शाह की दरगाह –करौली**
❖ **कमरुद्दीन शाह की दरगाह –झुंझुनू**
❖ **पीर अब्दुल्ला की दरगाह- बांसवाडा**
❖ **दीवान शाह की दरगाह - कपासन (चित्तौड़गढ़)**

## किले एवं महल

➢ राजा - महाराजाओं के रहने व उनका खजाना सुरक्षित रखने के लिए दुर्ग / गढ़ / किला का निर्माण किया जाता था जिसमें अनेक महीनों का राशन व पानी का भण्डारण होता था।
➢ दुर्ग में महल, शस्त्रागार, राजकीय आवास, सैनिक छावनियाँ , तालाब , कुण्ड छतरियाँ आदि होते थे।
➢ भारत में सर्वप्रथम दुर्ग के अवशेष सिन्धु घाटी सभ्यता से मिले हैं जिसमें नगर के दो भाग थे-
(i) दुर्गीकृत (ii) अदुर्गीकृत दुर्ग
➢ भारत में सर्वाधिक दुर्ग महाराष्ट्र में जबकि राजस्थान का दुर्गों में तीसरा स्थान है।
➢ राजस्थान में सर्वाधिक दुर्ग जयपुर जिले में हैं ।
➢ दुर्गों का सर्वप्रथम वर्गीकरण मनुस्मृति में हुआ है। मनुस्मृति में छः प्रकार के दुर्ग बताये गये हैं इनमें गिरि दुर्ग सर्वश्रेष्ठ है।
➢ कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य के सप्तांग सिद्धांत में सबसे महत्वपूर्ण दुर्ग को बताया है।

➢ **शुक्र नीति के अनुसार ९ प्रकार के दुर्ग बताए गए जो निम्न है-**
➢ शुक्रनीति में सैन्य दुर्ग को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

**(1 एरन दुर्ग**
➢ यह दुर्ग खाई, काँटों तथा कठोर पत्थरों से - निर्मित होता है।
➢ उदाहरण- रणथम्भौर दुर्ग, चित्तौड़ दुर्ग

**(2 धान्वन (मरुस्थल) दुर्ग**
➢ ये दुर्ग चारों ओर रेत के ऊँचे टीलों से घिरे होते है।
➢ उदाहरण- जैसलमेर , बीकानेर व नागौर के दुर्ग ।

**(3 औदक दुर्ग (जलदुर्ग)**
➢ ये दुर्ग चारों ओर पानी से घिरे होते है।
➢ उदाहरण- गागरोण का दुर्ग, भैंसरोड़गढ़ दुर्ग।

**(4 गिरि दुर्ग**
➢ ये पर्वत एकांत में किसी पहाड़ी पर स्थित होता है तथा इसमे जल संचय का अच्छा प्रबंध होता है।
➢ उदाहरण- कुम्भलगढ़, तारागढ़, जयगढ़, नाहरगढ़ (जयपुर), मेहरानगढ़ (जोधपुर)

❖ **जयगढ़ का किला**

- इस दुर्ग का निर्माण मानसिंह ने शुरू करवाया तथा पूर्ण सवाई जयसिंह ने करवाया।
- यह दुर्ग चिल्ह / ईगल पहाड़ी पर स्थित है।
- इस दुर्ग में प्रवेश के तीन मार्ग हैं 1. डूंगरपोल 2. भैरवपोल 3. अवनी पोल
- दुर्ग में राम, हरिहर व काल भैरव के प्राचीन मंदिर हैं।
- इसे रहस्यमयी दुर्ग, संकटमोचन दुर्ग भी कहते हैं।
- यह टांकों व सुरंगों हेतु प्रसिद्ध है। यहाँ राजस्थान का सबसे बड़ा टांका स्थित है। यह दुर्ग आमेर दुर्ग से एक सुरंग से जुड़ा है। इस दुर्ग में विजयगढ़ी महल है जिसे लघु दुर्ग कहते हैं जिसमें सवाई जयसिंह ने अपने भाई विजय सिंह को कैद किया। इसी विजयगढ़ी में आमेर शासकों का शस्त्रागार, खजाना व तोप बनाने का कारखाना था जो एशिया का एकमात्र तोपखाना था।
- विजयगढी के पास एक सात मंजिला प्रकाश स्तम्भ है जो ' दीया बुर्ज ' कहलाता है।
- इंदिरा गाँधी ने गुप्त खजाने की खोज के लिये इस दुर्ग में वर्ष 1975-1976 में खुदाई करवाई थी।
- यहाँ एशिया की सबसे बड़ी तोप जयबाण तोप रखी है जिसे एक ही बार चलाया गया। इसका गोला चाकसू में गिरा जहाँ गोलेलाव तालाब बन गया। इस तोप की मारक क्षमता 35 किमी, वजन 50 टन, लम्बाई 20 फीट, नली का व्यास करीब 11 इंच व गोले का वजन 50 किलोग्राम था।
- इस दुर्ग में एक कठपुतली घर व चारबाग शैली का उद्यान स्थित है। इस दुर्ग में लक्ष्मी निवास, विलास मंदिर, आराम मंदिर, राणावतजी का चौक, सुभट निवास (दीवान-ए-आम), खिलवत निवास (दीवान-ए- खास) स्थित है।

❖ **नाहरगढ़ का किला**

- इसका निर्माण 1734 ई. में सवाई जयसिंह ने मराठों से जयपुर की रक्षा हेतु करवाया।
- किवदन्ती के अनुसार इस दुर्ग का प्रतिदिन में बनाया गया निर्माण नाहरसिंह बाबा के चमत्कार के कारण टूट जाता इससे घटना के प्रभाव को निरस्त करने के लिए पण्डित रत्नाकर पुण्डरीक के कहने पर नाहरसिंह बाबा की का नाम नाहरगढ़ रख दिया।
- इसे महलों का दुर्ग व मीठड़ी का दुर्ग, सुदर्शनगढ़ भी कहते हैं।
- इस दुर्ग में माधोसिंह द्वितीय ने अपनी पासवान रानियों के लिए एक जैसे 9 महलों का निर्माण करवाया। जिनके नाम निम्न है- सूरज प्रकाश, फूल प्रकाश , जवाहर प्रकाश , ललित प्रकाश, आनन्द प्रकाश, लक्ष्मी प्रकाश, चाँद प्रकाश महल, खुशहाल प्रकाश, बसंत प्रकाश है।
- इस दुर्ग में सवाई जगत सिंह की प्रेमिका रसकपूर को बंदी बनाया था।
- इस दुर्ग को जयपुर का मुकुट व जयपुर शहर की ओर झाँकता दुर्ग, जयपुर का 'पहरेदार किला' कहते हैं।

❖ **चौमू का किला**

- इसका निर्माण कर्णसिंह ने प्रारम्भ करवाया तथा पूर्ण रघुनाथ ने करवाया।
- इसे रघुनाथगढ़ / धाराधारगढ़ / चौमूहागढ़ कहते हैं।
- चौमूहागढ़ पर नाथावतों का अधिकार था।
- इस दुर्ग में दो दरवाजे हैं जिसमें पश्चिमी दरवाजे को ध्रुव पोल तथा पूर्वी दरवाजे को गणेश पोल कहते हैं।
- इस दुर्ग में प्रमुख दर्शनीय स्थलों में देवी निवास, कृष्ण निवास, मोती निवास, शीश निवास, रतन निवास, सीताराम जी मंदिर, मोहनजी मंदिर गणेश जी मंदिर हैं।

❖ **बाला किला**

- इस दुर्ग का निर्माण निकुम्भ चौहानों ने करवाया था तथा 1049 ई . में इसका पुनर्निमाण कोकिल देव कछवाह के पुत्र अलघुराय ने करवाया। बाला दुर्ग इस दुर्ग पर कछवाहों की नरुका शाखा का अधिकार रहा।
- वर्ष 1527 ई. में हुए खानवा के युद्ध के समय यहाँ का शासक हसन खाँ मेवाती था। हसन खां मेवाती ने इस दुर्ग को वर्तमान स्वरूप दिया।

- खानवा विजय के बाद बाबर ने यह दुर्ग अपने पुत्र हिन्दाल को दिया था। कुछ समय शेरशाह सूरी का अधिकार रहा ।
- इस दुर्ग का पश्चिमी दरवाजा चांदपोल, पूर्वी सूरजपोल दक्षिणी लक्ष्मण पोल / जयपोल तथा उत्तरी अंधेरी पोल कहलाता है।
- शेरशाह के उत्तराधिकारी सलीमशाह ने दुर्ग में सलीमसागर जलाशय का निर्माण करवाया।
- सूरजमल ने दुर्ग पर अधिकार कर दुर्ग में ' सूरजकुण्ड ' बनवाया।
- वर्ष 1775 ई. में राव प्रतापसिंह ने दुर्ग पर अधिकार किया तथा सीताराम मंदिर का निर्माण करवाया।
- अलवर दुर्ग के अवशेषों को रावण देहरा के नाम से जाना जाता है।
- इस दुर्ग में अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब की तलवार, हैदर अली , खलीफा हजरत अली, नरदिर शहदुर्रानी, ताहमास्प, अब्बास खां, मोहम्मद गौरी का कवच व यशवंत होल्कर का कवच रखे है।

❖ **भानगढ़ का किला**

- इस दुर्ग को भूतों का किला कहते हैं।
- इस दुर्ग का निर्माण 1574 ई. में भगवंत दास ने करवाया तथा अपने पुत्र माधोसिंह को दे दिया।
- इस दुर्ग का प्रवेश द्वार शाही द्वार कहलाता है।
- इस दुर्ग के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में सेवड़े की छतरी, बालकनाथ का धूणा, गौमुख कुण्ड, मंगला माता मंदिर, भैरव गोपीनाथ मंदिर, हनुमान मंदिर आदि यहाँ दर्शनीय स्थल हैं।

❖ **तारागढ़ (अजमेर)**

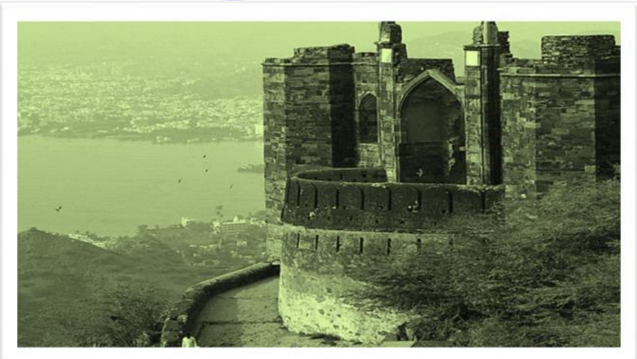

- इसका निर्माण 1113 ई. में अजयराज चौहान ने करवाया। यह दुर्ग बिठली पहाड़ी पर स्थित होने के कारण इसे दुर्ग को 'गढ़ बिठली' कहते हैं।
- इस दुर्ग का पुनः निर्माण 'उड़ना राजकुमार' पृथ्वीराज सिसोदिया ने करवाकर अपनी प्रिय रानी तारा के नाम पर तारागढ़ कर दिया।
- इस दुर्ग को "राजपूताना की कुंजी" कहते हैं।
- यह दुर्ग राजस्थान में मध्य में स्थित होने के कारण "राजस्थान का हृदय" कहलाता है।
- वर्ष 1832 में भारत के गवर्नर जनरल विलियम बैंटिक ने इस दुर्ग को दुनिया का दूसरा जिब्राल्टर और मुगल बादशाह अकबर ने तो इसकी श्रेष्ठता के कारण अपने साम्राज्य का सबसे बड़ा सूबा बनाया था।
- इस दुर्ग ने सर्वाधिक स्थानीय आक्रमण सहे हैं।
- इस दुर्ग में पीपल बुर्ज , फतेह बुर्ज , इमली बुर्ज , शृंगार चंबरी बुर्ज, जानूनायक बुर्ज, घूंघट बुर्ज, नगारची बुर्ज जैसे लगभग 14 बुर्ज स्थित हैं।
- यहाँ नानासाहेब का झालरा गोल झालरा, इब्राहिम का झालरा, बड़ा झालरा आदि जलाशय हैं।
- यहाँ दारा शिकोह का जन्म हुआ जिस कारण यह दुर्ग शिया मुसलमानों का तीर्थ स्थल कहलाता है। इस दुर्ग में घोड़े की मजार है जहाँ दाल चढ़ती है।
- यहाँ रुठी रानी उमादे जो मालदेव से रुठ कर अजमेर आ गयी थी उसका महल व छतरी है।
- यहाँ सिसाखान गुफा है जिसमें से पृथ्वीराज चौहान दुर्ग में स्थित चामुण्डा माता के दर्शन को जाते थे।
- यहाँ मीरान साहब की दरगाह (सैयद हुसैन खिंगसवार) स्थित है।
- तारागढ़ पर लाल बूंदी का करिश्माई पेड़ है। जहाँ मन्नत का धागा भी बांधा जाता है।

**1. "घूघट ", "गूगडी", "बादरा", "इमली" क्या हैं? (RAS 2016 )**

**a. तारागढ़ अजमेर की प्राचीर की विशाल बुर्जों के नाम**

b. मेवाड़ आंचलित में स्त्रियों के पहनावे के नाम

c.मारवाड़ की लोक परम्परा में जातियों के गोत्रों के नाम

d. राजस्थानी खान पान की विधिया

❖ **अकबर का किला (अजमेर)**

- इस दुर्ग का निर्माण 1570 ई. में ख्वाजा मोइनुद्दीन के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए अकबर ने करवाया।
- इस दुर्ग का पुनः निर्माण 1905 में लार्ड कर्जन ने करवाया था।
- यह राजस्थान का एकमात्र दुर्ग है जो मुगल शैली / फारसी शैली में बना है।
- हल्दीघाटी युद्ध से पहले यहाँ पर युद्ध की अंतिम योजना बनाई गयी थी।

## अभ्यास प्रश्न

### आरएएस मुख्य परीक्षा के पिछले वर्ष के प्रश्न

(Q1) मंदिर वास्तुकला में राजसिंह शैली की विशेषताओं का परीक्षण कीजिए। (MAINS 2021)

(Q2) राजस्थान में दुर्ग स्थापत्य की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए । (MAINS 2016)

(Q3) रणथम्भौर दुर्ग के सैन्य महत्व को समझाएँ । (MAINS 2013)

(Q4) गागरोन दुर्ग के स्थापत्य का वर्णन कीजिए। (MAINS 2012)

(Q5) हर्षदमाता मंदिर का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

(06) राजस्थान के हवेली स्थापत्य पर टिप्पणी दीजिए।

## अध्याय - 2

## चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ, उपशैलियाँ और हस्तशिल्प

- चित्रकला के उद्भव के संकेत मनुष्य की प्रारंभिक काल की सभ्यता के मिलते हैं, जैसे - जैसे सभ्यता विकसित होती गयी, वैसे - वैसे चित्रकला में भी अधिक प्रवीणता देखी जाने लगी।
- प्रागैतिहासिक काल में मनुष्य गुफाओं में रहता था तो गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी की, बाद में जब नगरीय सभ्यता का उदय होने लगा तो चित्रकारी गुफाओ से निकल कर दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुओं पर चित्रकारी करने लगे जैसे :- बर्तनों, वस्त्रों आदि।

### ❖ राजस्थानी चित्रकला का उद्भव और विकास

- बैराठ सभ्यता (कोटपूतली-बहरोड़) से मिले अनेक चित्र, कालीबंगा सभ्यता (हनुमानगढ़) से मिले अलंकृत ईंटों के से, आलनिया (कोटा) से मिले 5000 ई. पू. के चित्रों से तथा डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर द्वारा दर (भरतपुर) से खोजे गए अनेक पक्षियों के चित्रों से यह ज्ञात होता है की राजस्थान में प्राचीनकाल से ही चित्रकला विद्यमान थी।
- राजस्थान की इस प्राचीन चित्रकला को विभिन्न साक्ष्यों के माध्यम से बताया जा सकता है, जो निम्न है-

(i) विक्रम संवत् 84 के बड़ली गाँव के शिलालेख व माध्यमिका (चित्तौड़गढ़) के दो शिलालेखों की लिपि दर्शाती है कि राजस्थान की चित्रकला में अजन्ता चित्र शैली प्राचीनकाल में स्मृद्ध थी।

(ii) जैसलमेर से मिले 1060 ई. के चित्रित ग्रन्थ 'दस वैकल्पिक सुत्र या ओंध नियुक्ति वृति' राजस्थान का सबसे प्राचीन चित्रित ग्रन्थ है। इसे नागपाल के वंशज आनन्द ने आलेख्यकार पाटिल से निर्मित कराया था। इन ग्रंथों में लक्ष्मी , इंद्र, हाथी की आकृतियाँ अंकित है। इस ग्रन्थ को भारतीय चित्रकला का दीप स्तंभ कहते हैं।

(iii) राजस्थान का ताम्रपत्र पर चित्रित प्रथम ग्रंथ 'श्रावक-प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी' है जो तेजसिंह के समय 1260 ई. में आहड़ (उदयपुर) में चित्रित हुआ। इस ग्रंथ का चित्रकार कमलचंद्र था।

(iv) मेवाड़ का दूसरा चित्रित ग्रंथ 'सुपासनाह चरित्रम या सुपार्श्वनाथ चरितम्' है। इस ग्रंथ का चित्रकार हीरानंद था। यह ग्रंथ 1422-23 में महाराणा मोकल के समय देलवाड़ा में चित्रित किया गया।

(v) 16वीं शताब्दी में तिब्बत के इतिहासकार तारानाथ ने मरु प्रदेश में शृंगधर चित्रकार का उल्लेख किया है। जो प्रथम चित्रकार था । शृंगधर 7 वीं सदी का चित्रकार था जो राजस्थान का प्रथम चित्रकार माना जाता है। शृंगार मारवाड़ के राजा शील का दरबारी चित्रकार था। श्रृंगधर ने यक्ष शैली में चित्र बनाये।

- राजस्थान चित्रकला ने भारतीय नारी के **सौंदर्य** को उभारने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नायिकाओं के आभूषण, अंग प्रत्यंग, नासिका और नेत्रों के अंकन अत्यन्त कलापूर्ण चित्रित हुए हैं।

| **वृक्ष** | **चित्रशैली** |
|---|---|
| कदम्ब | उदयपुर (मेवाड़) शैली |
| केला | किशनगढ़ (नाथद्वारा) शैली |
| खजूर | कोटा, बूंदी शैली |
| पीपल | अलवर, जयपुर शैली |
| आम | जोधपुर, बीकानेर शैली |

| **पशुपक्षी** | **चित्रशैली** |
|---|---|
| कौआ, चील, ऊँट, घोड़े | जोधपुर, बीकानेर शैली |
| हाथी व चकोर | उदयपुर शैली |
| गाय | नाथद्वारा शैली |
| मोर व घोड़ा | जयपुर,अलवर शैली |

| **शैली** | **रंग** |
|---|---|
| मारवाड़, देवगढ़, बीकानेर | पीला |
| नाथद्वारा | पीला-हरा |
| अजमेर | पीला-लाल-हरा-बैंगनी |
| किशनगढ़ | श्वेत, गुलाबी |
| मेवाड़ | पीला-लाल |
| कोटा | पीला-हरा-नीला |
| बूंदी | हरा |
| जयपुर | केसरिया, हरा, लाल |

| **चित्रकला के विकास हेतु कार्यरत संस्थाएं** | |
|---|---|
| **संस्था** | **स्थान** |
| चितेरा | जोधपुर |
| धोरां | जोधपुर |
| तूलिका कलाकार परिषद | उदयपुर |
| टखमण -28 | उदयपुर |
| कलावृत | जयपुर |
| पैंग | जयपुर |
| आयाम | जयपुर |
| क्रिएटिव आर्टिस्ट ग्रुप | जयपुर |
| अंकन | भीलवाड़ा |

| ***राजस्थानी चित्रकला संग्रहालय*** | |
|---|---|
| पोथीखाना | जयपुर |
| पुस्तक प्रकाश | जोधपुर |
| सरस्वती भण्डार | उदयपुर |
| जैन भण्डार | जैसलमेर |
| कोटा संग्रहालय | कोटा |
| अलवर संग्रहालय | अलवर |

| **आँखों की बनावट** | **चित्र शैली** |
|---|---|
| तिरछी व चकोर के समान आँखे | नाथद्वारा शैली |
| मृग के समान आँखे | बीकानेर, कोटा शैली |
| बादाम के समान आँखे | जोधपुर शैली |
| मछली के समान आँखे | मेवाड़ शैली |
| कमल व खंजन के समान आँखे | किशनगढ़ शैली |
| बड़ी व मछली के समान आँखे | पुर, अलवर शैली |

### ***लित कला के विकास से संबंधित प्रमुख संस्थाएं***

❖ **ललित कला अकादमी -जयपुर**

- स्थापना 24 नवम्बर, 1957
- इस अकादमी का प्रमुख कार्य कलात्मक गतिविधियों का संचालन करना, कला प्रदर्शनियों का आयोजन तथा कलाकारों को फैलोशिप प्रदान करना होता है
- राजस्थान की दृश्य तथा शिल्प कला की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन।
- राज्य में सांस्कृतिक एकता स्थापित करना।

❖ **राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स- जयपुर**

- स्थापना -1857
- जयपुर महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय द्वारा स्थापित किया गया तब इसका नाम मदरसा-हुनरी था।
- स्वतंत्रता के बाद इसका नाम राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्डक्राफ्ट्स हो गया ।
- वर्तमान में मूर्तिकला तथा चित्रकला से संबंधित डिप्लोमा करवाया जाता हैं।

❖ **जवाहर कला केन्द्र-जयपुर**

- स्थापना 8 अप्रैल, 1993
- इसके वास्तुकार चार्ल्स कोरिया थे।
- उद्घाटन -शंकर दयाल शर्मा (तत्कालीन राष्ट्रपति)
- राजस्थान की समृद्ध कला परम्परा के संवर्धन, लोक मानस में बिखरी सांस्कृतिक विरासत एवं मरुधरा की अनमोल धरोहर के संरक्षण हेतु ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| शॉल | | | |
| गलीचे / नमदे | टोंक / जयपुर | | |
| संगमरमर की मूर्तियाँ | जयपुर | | अर्जुनलाल प्रजापत पद्मश्री |
| **रंगाई-छपाई**<br>अजरक प्रिंट | बालोतरा | नीले व लाल रंग का प्रयोग | |
| मलीर प्रिंट | बालोतरा | काला व कत्थई रंग | |
| सांगानेरी प्रिंट | सांगानेर (जयपुर ग्रामीण) | काला व लाल रंग | |
| बगरू प्रिंट | बगरू (जयपुर ग्रामीण) | प्राकृतिक रंगों का प्रयोग कर बेल बूंटे बनाये जाते है। | |
| आजम प्रिंट | अकोला-चित्तौड़गढ़ | | |
| जाजम प्रिंट | चित्तौड़गढ़ | | |
| बंधेज | जयपुर | Tie/Die कहा जाता है। | |
| चुनड़ी | जोधपुर | | |
| कोटा-डोरिया | कैथून-मांगरोल | | श्रीमती जेंनब (मांगरोल) |
| ब्लू पॉटरी<br>ब्लैक पॉटरी | जयपुर<br>कोटा | 25 से अधिक रंगों का प्रयोग | कृपालसिंह शेखावत पद्मश्री |
| काष्ठ कला | बस्सी चितौड़गढ़ | लकड़ी के मंदिर बनाये जाते है। | |
| तीर-कमान | बोडीगामा, चंदुजी का गढ़ा (बांसवाड़ा) | | |
| पोमचा | जयपुर | लड़के के जन्म- पीला पोमचा<br>लड़की के जन्म पर- गुलाबी पोमचा | |
| फड़ | शाहपुरा | | श्रीलाल जी जोशी<br>पार्वती जोशी (महिला) |

<u>**अभ्यास प्रश्न**</u>

**1. ब्लू पॉटरी से सम्बंधित किस व्यक्ति को पद्मश्री से सम्मानित किया गया**

(a) निहालसिंह

(b) नाथूजी सोनी

(c) हिसामुद्दीन

(d) कृपालसिंह शेखावत **(d)**

**2. थेवा कला क्या है**

(a) कपड़े पर किसी लोकदेवता का चित्रांकन

(b) सोने या चादी की नक्काशी किये हुये रंगीन कांच के टुकड़े

(c) चांदी में किमती पत्थर जड़ने की कला

(d) कपड़े पर अभ्रक की छपाई **(b)**

**3. तारकशी के जेवर के लिए कौनसा शहर प्रसिद्ध है**

(a) चौहटन (b) जयपुर

(c) शाहपुरा (d) नाथद्वारा **(d)**

**4. मीनाकारी की कला राजस्थान में सर्वप्रथम किसके द्वारा लाई गई**

(a) मानसिंह प्रथम (b) रामसिंह प्रथम

(c) अनुपसिंह (d) जयसिंह **(a)**

**5. चन्दूजी का गढा तथा वोडीगामा ' स्थान किसके लिए विख्यात हैं?**

(a) कुन्दन कला के लिए

(b) जाजम छपाई के लिए

(c) तीर - कमान निर्माण के लिए

(d) मीनाकारी के लिए **(c)**

**6. जिरोही, भाकला, गदहा किस उद्योग के नाम हैं?**

(a) जटपट्टी (b) पेचवर्क

(c) मीनाकारी (d) ब्लू पॉटरी **(a)**

**7. भरत, सूफ, हुरम जी, आरी किससे संबंधित हैं?**

(a) पीतल नक्कासी

(b) गलीचा व दरी उद्योग

(c) ब्लू पॉटरी

(d) कढाई व पैचवर्क **(d)**

**8. नागौर का बू गाँव किस लिए प्रसिद्ध हुआ करता था ?**

(a) पंचवर्क के लिए

(b) जूट पट्टी के लिए

(c) मिट्टी के खिलौने के लिए

(d) लोहे के औजारों के लिए **(c)**

**अभ्यास प्रश्न**

**आरएएस मुख्य परीक्षा गत वर्ष प्रश्न**

Q1. नाथद्वारा चित्रकला की दो प्रमुख विशेषताओं को सूचीबद्ध करें। [2013]

Q2. राज्यस्थानी चित्रकला की बूँदी और किशनगढ़ शैलियों की समानता और भिन्नता को रेखांकित कीजिए। [2018]

Q3. चित्रकला की देवगढ़ शैली पर एक लघु लेख लिखिए ।

Q4. राजस्थान की निम्नलिखित हस्तकलाओं का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

(1) ब्लू पॉटरी (2) थेवा कला (3) टेराकोटा

Q5. कोटा शैलि पर एक लघु लेख लिखिए।

Q6. मोलेला कलाकारों द्वारा टेराकोटा वस्तुओं के निर्माण में प्रयुक्त विधि का वर्णन कीजिए। [2018]

## अध्याय- 3
## प्रदर्शन कला एवं ललित कला तथा उनकी विशेषताएं

- ***शास्त्रीय संगीत***
- ***शास्त्रीय नृत्य***
- ***लोक संगीत एवं वाद्ययन्त्र***
- ***लोक नृत्य एवं नाट्य***

➢ संगीत से तात्पर्य गायन, वादन एवं नृत्य से है और यही तीन पक्ष इसके विकास के द्योतक हैं ।

➢ संगीत कला को दो भागों में बांटा जाता है-

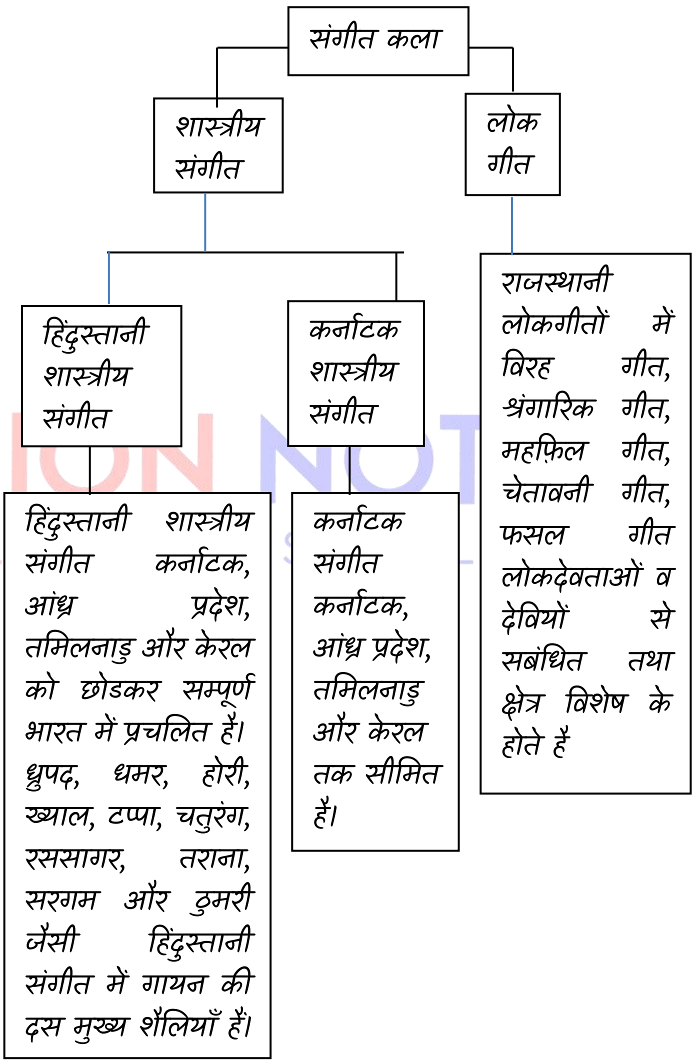


**शास्त्रीय संगीत**

- यह एक विशिष्ट गायन, वादन तथा नृत्य शैली का सूचक होता है जिसमें निश्चित नियमों का पालन किया जाता है ।
- इसमें भारतीय एवं ईरानी संगीत का समन्वय हुआ है ।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा का संरक्षण विशिष्ट गुरु तथा शिष्य परम्परा के संयोग से बनता है, उस विशिष्ट गुरु शिष्य परम्परा को' घराना ' कहा जाता है ।

❖ **चारबैत**

- इस लोकनाट्य का प्रारम्भ टोंक के नवाब फैजुल्ला खां के समय अब्दुल करीम खां एवं खलीफा करीख खां निहाग ने प्रारम्भ किया ।
- यह पठानी मूल का प्रसिद्ध लोकनाट्य है ।
- चारबैत नाट्य चार श्रेणियों में विभक्त है- भक्ति, श्रृंगार, रकीबखानी और गम्माज ।
- नवाब शहादत अली खां रामपुर से चारबैत कलाकारों को टोंक लाये थे ।
- चारबैत लोकनाट्य का मुख्य वाद्य यंत्र ढपली होता है ।

**अभ्यास प्रश्न**

**1. तमाशा मूलतः महाराष्ट्र का लोक नृत्य है, लेकिन ये राजस्थान के किस जिले में प्रसिद्ध है ?**
A. चूरू B. झुंझुनू
C. सीकर D. जयपुर **(D)**

**2. गौहरजान नर्तिका का संबंध किस लोक नाट्य से है ?**
A. रम्मत B. तमाशा
C. गवरी D. चारबैत **(B)**

**3. राजस्थान में पाट संस्कृति के क्षेत्र के प्रसिद्ध हैं?**
A. जोधपुर B. जैसलमेर
C. बीकानेर D. कोटा **(C)**

**4. मेवाड़ के भीलो द्वारा किया जाने वाला राजस्थान का सबसे प्राचीन लोकनाट्य /राजस्थान का मेरूनाटय कौनसा है?**
A. रम्मत B. रामलीला
C. गवरी/राई D. चारबैत **(C)**

**5. गवरी नृत्य में भगवान शिव का रूप करने वाला नाटककार कहलाता है ?**
A. बूड़िया B. पुरिया/राई
C. झामटिया D. कुटकडिया **(B)**

**6. गवरी नाटक में कुल कितनी लघु नाटिकाऐ हैं और सबसे अंतिम नाटिका का क्या नाम है ?**
A. 9, घडावत B. 10, मियावड
C. 11, वलावण D. 12, भंवरा- भंवरी **(C)**

**7. निम्न में से किस लोक नृत्य के जनक केकड़ी (अजमेर) के बिग्गाजी जाट या नागाजी जाट माने जाते हैं जो कि एक व्यवसायिक नाटक है ?**
A. भवाई B. बहरूपिया
C. चारबैत D. नौटंकी **(A)**

**8. लिटिल बवंडर की उपाधि प्राप्त श्रेष्ठा सोनी किस लोकनाट्य से जुड़ी है ?**
A. भवाई B. गवरी
C. चारबैत D. नौटंकी **(A)**

**9. राजस्थान में नौटंकी लोकनाट्य के जनक किसे माना जाता है?**
A. नत्थाराम शर्मा B. भूरीलाल
C. गिरिराज प्रसाद D. फैजुल्ला ख़ां **(B)**

**10. चारबैत, जो राजस्थान कहाँ की प्रसिद्ध है?**
A. जैसलमेर B. टोंक
C. बाँसवाड़ा D. श्रीगंगानगर **(B)**

**<u>अभ्यास प्रश्न</u>**

**1. आरएएस मुख्य परीक्षा गत वर्ष प्रश्न**

Q1. रावणहत्था क्या है? [2021]

Q2. राजस्थान की उन जनजातियों पर प्रकाश डालिए जो संगीत विद्या में पारंगत हैं। [2012]

Q3. तमाशा लोकनाट्य पर संक्षिप्त टिप्पणी दीजिए ।

Q4. राजस्थान की चार प्रमुख व्यावसायिक जातियों के नाम लिखिए, जिन्होंनें संगीत को एक व्यवसाय के रूप में अपनाया।

Q5. गींदड़ नृत्य का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

Q6. अलगोजा पर टिप्पणी दीजिए।

Q7. करताल व खड़ताल पर टिप्पणी दीजिए।

## अध्याय- 4

## भाषा एवं साहित्य

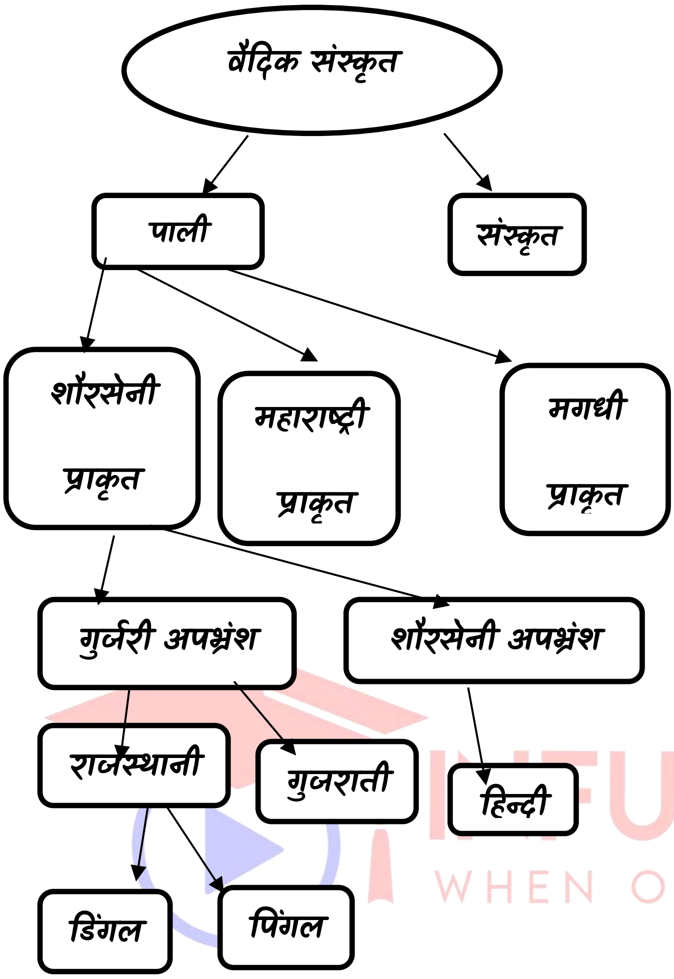


### राजस्थानी भाषा या राजस्थानी हिन्दी

| क्षेत्र | बोली |
|---|---|
| पश्चिमी राजस्थान | जोधपुर की खड़ी, राजस्थानी इटकी, बीकानेरी, बागड़ी, शेखावाटी, मेवाड़ी, खैराड़ी, सिरोही की बोलियाँ, गोड़ावाड़ी, देवड़ावाटी |
| उत्तरी-पूर्वी राजस्थान | अहीरवाटी और मेवाती |
| मध्य-पूर्वी राजस्थान | ढून्ढाड़ी, तोरावाटी, खड़ी, जयपुरी, कोंटड़ा, राजावाटी, अजमेरी, किशनगढ़ी, चौरासी, नागरचाल, हाड़ौती |
| दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान | मालवी- रागड़ी और सौंडवाड़ी |
| दक्षिणी राजस्थान | नीमाड़ी |

### ❖ राजस्थानी भाषा

- 'राजस्थान के लिए एक लोक कहावत प्रसिद्ध है कि- "पाँच कोस पर पानी बदले, सात कोस पर बाणी।"
- राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में शामिल 22 भाषाओं में शामिल नही क्या गया है । इस सम्बन्ध में सलाह देने हेतु केन्द्र सरकार ने हाल ही में एक समिति का गठन भी किया है।
- राजस्थानी भाषा राजस्थान मध्य भारत के पश्चिमी भाग , सिन्ध , पंजाब , हरियाणा के राजस्थान के निकटवर्ती क्षेत्रों में बोली जाती है।
- 21 फरवरी को राजस्थानी भाषा दिवस तथा 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- वर्तमान में राजस्थानी भाषा बोलने वालों की संख्या 11-12 करोड़ से अधिक है।
- राजस्थानी भाषा का वक्ताओं की दृष्टि से भारत में 7वाँ स्थान तथा विश्व में 16वाँ स्थान है ।
- राजस्थान की राजभाषा हिन्दी है परन्तु यहाँ की मातृभाषा राजस्थानी है।
- भाषा विज्ञान के अनुसार राजस्थानी भाषा भारोपीय भाषा परिवार के अंतर्गत आती है।
- राजस्थानी बोलियों का सर्वप्रथम वैज्ञानिक वर्गीकरण सन् 1912 ई. में सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक **"लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया" (विषयक विश्व कोष)** में किया तथा सर्वप्रथम राजस्थानी शब्द दिया।
- सन् 1914 से सन् 1918 के बीच इटली के विद्वान एल. पी. टेस्सी टोरी ने **"इण्डियन ऐन्टीक्वेरी"** नामक पत्रिका में राजस्थानी भाषा की उत्पति और विकास पर प्रकाश डाला ।
- राजस्थानी भाषा ' मुड़िया ' लिपि में लिखी जाती है।
- बिना मात्रा वाले महाजनी शब्द मोड़ कर लिखे जाते है जिन्हें मुड़िया अक्षर कहते है ।
- मुडियां अक्षर के आविष्कारक राजा टॉडरमल थे।
- प्राचीन समय में राजस्थान की भाषा को ' मरू ' भाषा के नाम से जाना जाता था ।
- जैन कवियों ने अपने ग्रन्थों की भाषा को मरू भाषा कहा है।
- मरू भाषा का सर्वप्रथम उल्लेख वि.सं. 835 में उद्योतन सूरी द्वारा लिखित ' **कुवलयमाला** ' में वर्णित 18 देशी भाषाओं में किया गया जो पश्चिमी राजस्थान की भाषा थी ।
- कवि कुशललाभ के ग्रन्थ **"पिंगल शिरोमणि"** तथा अबुल फजल के **"आईने अकबरी"** में **"मारवाड़ी शब्द"** का प्रयोग किया गया है
- 17वीं शताब्दी की ' नौबोली छंद ' तथा 18वीं शताब्दी की ' आठ देशरी गुजरी ' नामक रचनाओं में भी मरू भाषा का उल्लेख हुआ है ।
- राजस्थान की कुल बोलियों की संख्या 73 है ।
- राजस्थान के सबसे अधिक क्षेत्रफल में बोली जाने वाली भाषा मारवाड़ी है ।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

**प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)**

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

| EXAM (परीक्षा) | DATE | हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या |
|---|---|---|
| RAS PRE. 2021 | 27 अक्तूबर | 74 प्रश्न आये |
| RAS Mains 2021 | October 2021 | 52% प्रश्न आये |
| RAS Pre. 2023 | 01 अक्टूबर 2023 | 96 प्रश्न (150 मेंसे) |
| SSC GD 2021 | 16 नवम्बर | 68 (100 में से) |

whatsapp - https://wa.link/uwc5lp 1 web.- https://bit.ly/3X6MGue

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

| | | |
|---|---|---|
| SSC GD 2021 | 08 दिसम्बर | 67 (100 में से) |
| RPSC EO/RO | 14 मई (1st Shift) | 95 (120 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 14 सितम्बर | 119 (200 में से) |
| राजस्थान S.I. 2021 | 15 सितम्बर | 126 (200 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (1st शिफ्ट) | 79 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 103 (150 में से) |
| RAJASTHAN PATWARI 2021 | 24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट) | 91 (150 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (1st शिफ्ट) | 59 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 27 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 61 (100 में से) |
| RAJASTHAN VDO 2021 | 28 दिसंबर (2nd शिफ्ट) | 57 (100 में से) |
| U.P. SI 2021 | 14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट | 91 (160 में से) |
| U.P. SI 2021 | 21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट) | 89 (160 में से) |
| Raj. CET Graduation level | 07 January 2023 (1st शिफ्ट) | 96 (150 में से ) |
| Raj. CET 12th level | 04 February 2023 (1st शिफ्ट) | 98 (150 में से ) |

**& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.**

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

# Our Selected Students

## Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

| Photo | Name | Exam | Roll no. | City |
|---|---|---|---|---|
| | **Mohan Sharma S/O Kallu Ram** | Railway Group - d | 114195120370022 | PratapNagar Jaipur |
| | **Mahaveer singh** | Reet Level- 1 | 1233893 | Sardarpura Jodhpur |
| 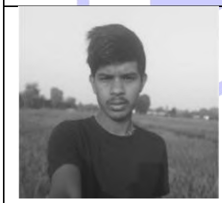 | **Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati** | SSC CHSL tier-1 | 2006018079 | Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP |
| N.A | **Mahender Singh** | EO RO (81 Marks) | N.A. | teh nohar , dist Hanumangarh |
| | **Lal singh** | EO RO (88 Marks) | 13373780 | Hanumangarh |
| N.A | **Mangilal Siyag** | SSC MTS | N.A. | ramsar, bikaner |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | **MONU S/O KAMTA PRASAD** | SSC MTS | 3009078841 | kaushambi (UP) |
| | **Mukesh ji** | RAS Pre | 1562775 | newai tonk |
| | **Govind Singh S/O Sajjan Singh** | RAS | 1698443 | UDAIPUR |
| | **Govinda Jangir** | RAS | 1231450 | Hanumangarh |
| N.A | **Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma** | RAS | N.A. | Churu |
| | **DEEPAK SINGH** | RAS | N.A. | Sirsi Road , Panchyawala |
| N.A | **LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL** | RAS | N.A. | AKLERA , JHALAWAR |
| N.A | **Ramchandra Pediwal** | RAS | N.A. | diegana , Nagaur |

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | **Monika jangir** | RAS | N.A. | jhunjhunu |
| | **Mahaveer** | RAS | 1616428 | village-gudaram singh, teshil-sojat |
| N.A | **OM PARKSH** | RAS | N.A. | Teshil-mundwa Dis- Nagaur |
| N.A | **Sikha Yadav** | High court LDC | N.A. | Dis- Bundi |
| 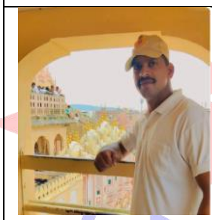 | **Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel** | Rac batalian | 729141135 | Dis.-Bhilwara |
| N.A | **mukesh kumar bairwa s/o ram avtar** | 3rd grade reet level 1 | 1266657 | JHUNJHUNU |
| N.A | **Rinku** | EO/RO (105 Marks) | N.A. | District: Baran |
| N.A. | **Rupnarayan Gurjar** | EO/RO (103 Marks) | N.A. | sojat road pali |
| | **Govind** | SSB | 4612039613 | jhalawad |

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | **Jagdish Jogi** | EO/RO (84 Marks) | N.A. | tehsil bhinmal, jhalore. |
| | **Vidhya dadhich** | RAS Pre. | 1158256 | kota |

*And many others……*

FREE SAMPLE

**नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें**

**Whatsapp करें –** [https://wa.link/uwc5lp](https://wa.link/uwc5lp)

**Online order करें –** [https://bit.ly/3X6MGue](https://bit.ly/3X6MGue)

**Call करें - 9887809083**